

नवीन पूर्वांचल संदेश

द्वितीय अर्ध वार्षिक पत्रिका - वर्ष 2025 - 26

21वां अंक

(मेघालय पर्यटन)

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग - 793001.

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2025 के
शुभ अवसर पर मुख्य अतिथि
पद्मश्री श्रीमती सिल्वी पासाह महोदया
का खासी शॉल से स्वागत करते हुए
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय।





हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2025 के शुभ
अवसर पर मुख्य अतिथि
पद्मश्री श्रीमती सिल्वी पासाह महोदया
का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय।

स्वागत संबोधन प्रस्तुत करते हुए
श्रीमती धनलक्ष्मी चौरसिया,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदया।





कार्यालय की हिंदी पत्रिका
नवीन पूर्वांचल संदेश के 20वें अंक का
विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि पद्मश्री
श्रीमती सिल्वी पासाह महोदया,
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय,
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदया,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय।

नवीन पूर्वांचल संदेश
द्वितीय अर्ध वार्षिक पत्रिका – वर्ष 2025 - 26
21वां अंक

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्री राजेश रंजन महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
प्रधान संपादक	:	श्री रूपक साहा वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
परामर्शदाता	:	श्री राज्यपाल देवकोटा वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक मंडल	:	श्रीमती स्निग्धा फुकन, सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री अजित सिंह, वरिष्ठ अनुवादक श्रीमती विजय लक्ष्मी एस., कनिष्ठ अनुवादक
आवरण पृष्ठ	:	मेघालय के चेरापूंजी (सोहरा) के पास स्थित 'गार्डन ऑफ केव्स'

नोट: पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित विचार रचनाकारों के निजी हैं, उससे संरक्षक अथवा संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा



सत्यमेव जयते

संदेश



हमारे कार्यालय की अर्ध वार्षिक पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 21वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है।

हिंदी भाषा देश के विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जो भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है। हिंदी भाषा राष्ट्रीय ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय पटल पर भी अभिव्यक्ति की सबल तथा प्रभावी संवाहिका है। विश्व की एक सशक्त भाषा के रूप में उभरने के सभी गुण हिंदी में निहित है।

यह पत्रिका न केवल रचनाओं का संकलन है, बल्कि हमारे सामूहिक विचार, सृजनशीलता और कार्यसंस्कृति का सशक्त प्रतिबिंब भी है। इसमें प्रकाशित 'मेघालय पर्यटन' से संबंधित लेख, कविताएँ, अनुभव एवं विचार रचनाकारों की प्रतिभा, संवेदनशीलता और समर्पण को उजागर करते हैं। हमें आशा है कि यह अंक पाठकों को उपयोगी जानकारी देने के साथ साथ उन्हें मेघालय पर्यटन की ओर प्रेरित भी करेगा।

पत्रिका को मूर्त रूप देने के लिए संपादक मंडल, जाँच समिति एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र है। आप सभी के निरंतर सहयोग और उत्साह से ही यह पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

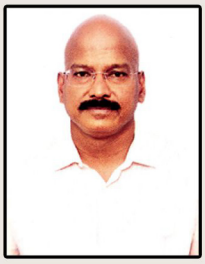
हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

राजेश

(राजेश रंजन)
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

सत्यमेव जयते

संदेश



इस कार्यालय की अर्धवार्षिक ई–पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 21वां अंक आप सभी पाठकों को समर्पित करते हुए मैं स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ।

हमारा दायित्व है कि हम हिंदी के संवर्धन में सक्रिय भूमिका निभाएँ तथा कार्यालयीन कार्यों, शिक्षा, शोध और दैनिक संवाद में इसका अधिकाधिक प्रयोग करें। हिंदी जितनी अधिक जीवंत, सृजनशील और प्रचलित होगी, उतना ही हमारा राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक आत्मविश्वास सुदृढ़ होगा।

यह पत्रिका केवल हमारे कार्यालय की गतिविधियों का दस्तावेज मात्र न होकर, सामूहिक प्रयासों, उपलब्धियों और सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का सशक्त मंच भी है। मैं संपादकीय मंडल तथा सभी रचनाकारों को उनके अथक परिश्रम, समर्पण और प्रतिबद्धता के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका आप सभी को जानकारी, प्रेरणा और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करेगी तथा भविष्य में भी हम इसी उत्साह के साथ इसे नई ऊँचाइयों तक ले जाने हेतु प्रयासरत रहेंगे।

आप सभी पाठकों से आग्रह है कि अध्ययन के पश्चात अपने सुझाव एवं विचार साझा करें, ताकि भविष्य में पत्रिका को और अधिक समृद्ध एवं आकर्षक स्वरूप में प्रस्तुत किया जा सके।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास और सफलता की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(रूपक साहा)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
एवं प्रधान संपादक 'नवीन पूर्वांचल संदेश'

सत्यमेव जयते

संदेश



मुझे अपार प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालय की अर्धवार्षिक ई–पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 21वाँ अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

हिंदी का महत्व केवल राजभाषा होने तक सीमित नहीं है। यह हमारी सांस्कृतिक अस्मिता, परंपराओं और राष्ट्रीय एकता का सशक्त प्रतीक है। यह भाषा सरलता में महान और अभिव्यक्ति में प्रखर है, जो विविधता से भरे देश को एक सूत्र में बाँधती है।

मैं इस अवसर पर सभी रचनाकारों, जाँच समिति तथा संपादक मंडल को हार्दिक अभिनंदन प्रेषित करता हूँ, जिनके समर्पण और परिश्रम से यह अंक संभव हो सका है। मुझे विश्वास है कि यह अंक पाठकों को मेघालय पर्यटन के परिपेक्ष में नवीन दृष्टिकोण, सकारात्मक ऊर्जा एवं रचनात्मक प्रेरणा प्रदान करेगा।

पत्रिका की निरंतर प्रगति, लोकप्रियता और उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(रातुल चंद्र बरा)
उप महालेखाकार (ले.ह. एवं वी.एल.सी.)

संपादकीय..

हमें अत्यंत प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालय की अर्धवार्षिक ई–पत्रिका 'नवीन पूर्वांचल संदेश' का 21वाँ अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। यह अंक न केवल हमारे संस्थान की गतिविधियों और उपलब्धियों का प्रतिबिंब है, बल्कि हमारे सहकर्मियों की सृजनात्मक ऊर्जा, वैचारिक गहराई और राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण भी है।

इस अंक में कार्यालय के प्रतिभाशाली रचनाकारों द्वारा रचित लेख, कविताएँ आदि पत्रिका को समृद्ध बनाते हैं। यह देखकर अत्यंत हर्ष होता है कि व्यस्त कार्यालयीन दायित्वों के बीच भी हमारे सहकर्मी साहित्यिक अभिरुचि को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं।

डिजिटल युग में ई–पत्रिका का स्वरूप हमें व्यापक रूप से पाठक–वर्ग तक पहुँचने का अवसर प्रदान करता है। यह मंच विचारों के आदान–प्रदान, अनुभवों की साझेदारी और रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त माध्यम सिद्ध हो रहा है। हमारा प्रयास है कि प्रत्येक अंक विषय–वस्तु, प्रस्तुति और गुणवत्ता के स्तर पर पूर्ववर्ती अंकों से एक कदम आगे हो।

संपादकीय मंडल की ओर से हम सभी रचनाकारों, जाँच समिति एवं सहयोगी साथियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हैं, जिनके समर्पण और परिश्रम से यह अंक संभव हो पाया है।

पाठकों से विनम्र अपेक्षा है कि वे पत्रिका का अवलोकन कर अपनी मूल्यवान प्रतिक्रिया अवश्य प्रदान करें, ताकि आगामी अंकों को और अधिक उत्कृष्ट बनाया जा सके।

इसी विश्वास और सकारात्मक संकल्प के साथ यह अंक आप सभी को समर्पित है।

मंगलकामनाओं सहित।

हिंदी प्रकोष्ठ,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
मेघालय, शिलांग

नवीन पूर्वांचल संदेश
द्वितीय अर्ध वार्षिक पत्रिका – वर्ष 2025 – 26
21वां अंक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख/रचना	रचनाकार/लेखक	पृष्ठ
1.	मेघालय – बादलों का घर	सुश्री ब्रेंडा शानेन सियेम	12
2.	मेघालय के झरने	श्रीमती मनीषा थाबाह	15
3.	मेघालय पर्यटन	श्रीमती वीणा कुमारी राय	16
4.	बादलों का घर, प्रकृति और संस्कृति का अद्भुत संगम – 'मेघालय'	श्रीमती ग्रेसी हथनेउ वाइफेई	18
5.	मेघालय – जहाँ बादल धरती से बातें करते हैं	श्रीमती मेघा रानी	21
6.	मेघालय : सुकून की वादी	श्री भगीरथ प्रसाद	23
7.	चेरापूंजी : झरनों की श्रृंखला के बीच एक स्मरणीय यात्रा – वृत्तांत	श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.	24
8.	डावकी नदी : पारदर्शी जलधारा	सुश्री सबिता चक्रवर्ती	27
9.	मेघालय की गोद में	श्रीमती मेघा रानी	29
10.	मेघालय यात्रा : बादलों के घर में प्रकृति का महाकाव्य	श्री अजित सिंह	30
11.	'क्रेम चिम्पे': मेघालय की रहस्यमयी गुफा	श्री पार्थ ज्योति दे	32
12.	श्री माँ जयन्ती मंदिर, नार्तियांग	श्रीमती स्निग्धा फुकन	34
13.	मेघालय : झरनों और वादियों की धरती	श्री भगीरथ प्रसाद	36
14.	सेवन सिस्टर्स जलप्रपात, मेघालय : सात धाराओं में बहता प्रकृति का महाकाव्य	श्री दीनानाथ साह	37
15.	मावफ्लांग का पवित्र वन	श्रीमती मनीषा थाबाह	39
16.	मावलिननोंग: स्वच्छता, सादगी और सौंदर्य का जीवंत स्वप्न	श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.	41
17.	नोंगक्रेम नृत्य: आस्था, उत्सव और परंपरा का जीवंत महागान	श्री पार्थ ज्योति दे	43
18.	मेघालय के आँचल में	श्री घनश्याम कुमार	45
19.	"पूर्वोत्तर का स्वर्ग : मेघालय की खूबसूरती"	श्री श्रवण कुमार	46
20.	प्रकृति का अनुपम सौन्दर्य श्नोंगपदेंग	श्रीमती स्निग्धा फुकन	48

अपने अनमोल वचनों से श्रोताओं को अभिभूत करते हुए
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय





सभा का उद्‌बोधन करती हुई मुख्यातिथि महोदया

2024 - 25 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले अनुभाग के शाखा अधिकारी को मुख्य अतिथि महोदया शील्ड से सम्मानित करती हुई







समारोह की शोभा बढ़ाती हुई बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक नृत्य की प्रस्तुति

समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ









समारोह के अंतिम चरण में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय



समारोह के शुभ अवसर पर मंच संचालन करते हुए श्री जितिन कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

समारोह में उपस्थित मुख्य अतिथि सहित कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारीगण



हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली बालिकाओं/ कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय एवं प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदय









हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाली बालिकाओं/ कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा) महोदया एवं वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) महोदय











मुख्य अतिथि महोदया, विभागाध्यक्ष, समूह अधिकारी एवं राजभाषा संवर्ग के अधिकारी एवं कर्मचारीवृंद

कार्यालय में आयोजित पखवाड़ा समापन समारोह 2025 के विषय में विभिन्न समाचार पत्रों में विवरण

शिलांग में लेखा परीक्षा, लेखा हकदारी और क्षमता निर्माण व ज्ञान संस्थान ने मनाया हिंदी पखवाड़ा

शिलांग, 26 सितंबर। कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से आज कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि पद्मश्री सिलबी पासाह, सेवानिवृत्त हिंदी शिक्षिका, सर्व शिक्षा अभियान और शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण निदेशालय की संसाधन व्यक्ति और एक प्रसिद्ध कलाकार, शिलांग उपस्थित थीं। इस अवसर पर धनलक्ष्मी चौरसिया, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग ने अपने स्वागत भाषण में सभा में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का



स्वागत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में राजभाषा से संबंधित विविध जानकारियां दीं तथा कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की। उन्होंने अवगत कराया कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य हिंदीतर भाषी कार्मिकों को हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिंदी भाषा में दक्ष बनाना है। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कार एवं प्रोत्साहन राशियां प्रदान की जाती हैं, जिनसे उन्हें हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलती है। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने से कार्मिकों का हिंदी में काम करने के प्रति आत्मविश्वास भी उत्पन्न होता है। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिकाओं क्रमशः पूर्वाशा का 34 वें अंक और नवीन पूर्वांचल संदेश का 20वें अंक, का विमोचन मुख्य अतिथि तथा लहुंखोथांग हैंगसिंग, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और के.लिन हैरिस खारशींग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वारा किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2024-25 के लिए हिंदी में कार्य करने वाले श्रेष्ठ अनुभाग अर्थात एएमजी-III को विभागीय रनिंग शील्ड मुख्य अतिथि महोदया के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया गया। इसके अलावा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन एवं हस्तलेखन, प्रश्नोत्तरी और आशु भाषण प्रतियोगिता इत्यादि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए नकद पुरस्कार क्रमशः रु. 2,500, रु. 2,000 और रु.1,500 समूह अधिकारियों के कर-कमलों द्वारा प्रदान किए गए। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया एवं बच्चों को नकद पुरस्कार भी प्रदान किए गए। अंत में इस वर्ष हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग के वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), रूपक साहा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

मेघालय की खबरें

शिलांग : संयुक्त रूप से मनाया हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह

शिलांग: कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से 26 सितंबर, 2025 को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि पद्मश्री सिलबी पासाह, सेवानिवृत्त हिंदी शिक्षिका, सर्व शिक्षा अभियान और शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण निदेशालय की संसाधन व्यक्ति और एक प्रसिद्ध कलाकार, शिलांग उपस्थित थे। इस अवसर पर श्रीमती धनलक्ष्मी चौरसिया, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग ने अपने स्वागत भाषण में सभा में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं तीनों कार्यालयों



के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में राजभाषा से संबंधित विविध जानकारियां दीं तथा कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की। उन्होंने अवगत कराया कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य हिंदीतर भाषी कार्मिकों को हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिंदी भाषा में दक्ष बनाना है। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कार एवं प्रोत्साहन राशियां प्रदान की जाती हैं, जिनसे उन्हें हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलती है। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने से कार्मिकों का हिंदी में काम करने के प्रति आत्मविश्वास भी उत्पन्न होता है। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिकाओं क्रमशः 'पूर्वाशा' के 34वें अंक और 'नवीन पूर्वांचल संदेश' के 20वें अंक, का विमोचन मुख्य अतिथि लहुंखोथांग हैंगसिंग, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और केल्विन हैरिस खारशींग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर वर्ष 2024-25 हेतु हिंदी में कार्य करने वाले श्रेष्ठ अनुभाग अर्थात एएमजी-III को विभागीय रनिंग शील्ड मुख्य अतिथि महोदया के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया गया। इसके अलावा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन एवं हस्तलेखन, प्रश्नोत्तरी और आशु भाषण प्रतियोगिता इत्यादि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए नकद पुरस्कार क्रमशः रु. 2,500, रु. 2,000 और रु.1,500 समूह अधिकारियों के कर-कमलों द्वारा प्रदान किए गए। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया एवं बच्चों को नकद पुरस्कार भी प्रदान किए गए। अंत में इस वर्ष हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग के वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), रूपक साहा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

दैनिक पूर्वोदय

शिलोंग : कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), (लेखा एवं हकदारी) व क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान के हिंदी पखवाड़ा का समापन

शिलोंग, 26 सितंबर (पू.सं.)। कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलोंग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलोंग और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलोंग द्वारा संयुक्त रूप से गत 26 सितंबर को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह मनाया गया। समापन समारोह पर मुख्य अतिथि पद्मश्री श्रीमती सिलबी पासाह, सेवानिवृत्त हिंदी शिक्षिका, सर्वशिक्षा अभियान और शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण निदेशालय की संसाधन व्यक्ति और एक प्रसिद्ध कलाकार उपस्थित थे।

इस मौके पर श्रीमती धनलक्ष्मी चौरसिया, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार



(लेखापरीक्षा), शिलोंग ने मुख्य अतिथि एवं तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने राजभाषा से संबंधित विविध जानकारियां दीं तथा कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को और बढ़ाने की अपील की। उन्होंने बताया कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य हिंदीतर भाषी कार्मिकों को हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के जरिए हिंदी में दक्ष बनाना है।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिकाओं क्रमशः पूर्वाशा के 34वें अंक और नवीन पूर्वांचल संदेश के 20वें अंक का विमोचन मुख्य अतिथि व लहुंखोथांग हैंगसिंग, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और के.लिन हैरिस खारशींग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ने किया।

साथ ही वर्ष 2024-25 हेतु हिंदी में कार्य करने वाले श्रेष्ठ अनुभाग अर्थात एएमजी-III को विभागीय रनिंग शील्ड प्रदान किया गया। इसके अलावा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ एवं बच्चों को भी नकद पुरस्कार दिए गए। हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलोंग के वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन), रूपक साहा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

मेघालय – बादलों का घर



सुश्री ब्रेंडा शानेन सियेम
सुपुत्री – श्रीमती बेथेल लिंडा सियेम
वरिष्ठ लेखाकार

मेघालय, जिसे 'बादलों का घर' कहा जाता है, निस्संदेह भारत के सबसे सुंदर राज्यों में से एक है। यहाँ की जलवायु लगभग पूरे वर्ष पर्यटकों का स्वागत करती है और यह विश्व की सबसे समृद्ध जैव – विविधताओं में से एक के लिए भी प्रसिद्ध है। प्रकृति की इस अनुपम देन में प्रसिद्ध मानसून, मनोरम प्राकृतिक दृश्य, गुफाएँ, झरने, झीलें, विविध वनस्पति और जीव – जंतु तथा जीवित जड़ पुल (लिविंग रूट ब्रिज) जैसे अद्भुत वनस्पति चमत्कार शामिल है।

इसके अतिरिक्त, मेघालय समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविधता से भी परिपूर्ण है। वर्ष के अलग – अलग समय पर मनाए जाने वाले पारंपरिक त्यौहार राज्य के रंग और आकर्षण को और बढ़ाते है। इस राज्य में पर्यटन के विकास की अपार संभावनाएँ हैं और उत्तर – पूर्व भारत के एक स्थल के रूप में मेघालय को विकसित करने के लिए सरकार विशेष प्रयास कर रही है।

पर्यटन के विकास में इको – टूरिसम, एडवेंचर – टूरिसम, हेरिटेज – टूरिसम, अनुभवात्मक पर्यटन तथा सतत और जिम्मेदार पर्यटन के मूल सिद्धांतों पर आधारित पर्यटन को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। अपने मनोहारी प्राकृतिक स्थलों के कारण मेघालय को फिल्म और टेलिविजन शूटिंग के लिए एक आदर्श स्थान के रूप में भी उपयोग किया जा सकता है।

मेघालय अनेक सुंदर पर्यटन स्थलों से भरपूर है, जहाँ प्रकृति अपनी सम्पूर्ण महिमा में दिखाई देती है। इनमें से कुछ प्रमुख स्थान इस प्रकार हैं –

शिलांग

राज्य की राजधानी, कई सुंदर स्थलों का घर है। इनमें वार्ड्स लेक, फान नोंगलाईत पार्क (लेडी हैडरी पार्क), विशाल पोलो ग्राउंड और हरा – भरा गोल्फ कोर्स (जो देश के सबसे ऊँचे 18 – होल लिंक गोल्फ कोर्स में से एक है) तथा शिलांग पीक भी शामिल है।

उमियम (बरापानी)

शिलांग से 17 कि.मी. दूर स्थित है और इसे राज्य का एक लोकप्रिय पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया है। यहाँ नौकायान, वॉटर – स्कीइंग, वॉटर स्कूटर आदि जल क्रीड़ाओं की सुविधाएं तथा ऑर्किड लेक रिजार्ट के खुलने से इसकी आकर्षण क्षमता और बढ़ गई है।

शिलांग पीक

एक आदर्श पिकनिक स्थल है, जो शिलांग शहर से 10 कि.मी. दूर स्थित है। समुद्र तल से लगभग 1965 मीटर की ऊँचाई पर स्थित इस स्थान से साफ दिन में हिमालय की चोटियाँ तथा बांग्लादेश के मैदान भी देखे जा सकते हैं।

स्मिट गाँव

अपनी ग्रामीण प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है – यह स्थान अपने बागवानी वैभव और सांस्कृतिक महत्व के लिए भी जाना जाता है। स्मिट गाँव में स्थित 'इंग – साद' क्षेत्र के पारंपरिक शाही परिवारों का निवास है। 'इंग – साद' में हर वर्ष लगभग नवंबर महीने में प्रसिद्ध नोंगक्रेम नृत्य का आयोजन होता है। स्मिट मेघालय के प्राकृतिक आश्चर्यों में से एक, लाइटलुम के निकट भी स्थित है।

लाइटलुम कैन्यन

जिसका शाब्दिक अर्थ 'पहाड़ियों का अंत' है, शिलांग के दक्षिण की ओर स्थित है। यह अद्‌भुत दर्शनीय स्थल विशाल पहाड़ियों और घाटियों से घिरे सर्वोत्तम विहंगमय दृश्य प्रदान करता है।

मावफ्लांग सेक्रेड ग्रोव

सदियों से खासी रीति – रिवाज और परंपराएँ इस भूमि और वनों से जुड़ी हुई है। इन वनों में से एक आज भी अपना महत्व बनाए हुए है – मावफ्लांग का पवित्र वन। इस पवित्र वन से आंगतुकों को कुछ भी, यहाँ तक कि कंकड या टहनी भी, ले जाने की अनुमति नहीं है।

ऊपर फैली घनी छाया और पैर के नीचे मुलायम ह्यूमस आपको प्राचीन युग में ले जाती है, जो आसपास की हरी घास भूमि और चंचल चीड़ के वृक्षों से भरी पहाड़ियों के विपरीत एक अलग ही अनुभव प्रदान करती है।

दुर्लभ पौधों, मशरूम आदि के अतिरिक्त यह जंगल पुराने राज्याभिषेक और बलि स्थलों का भी घर है, जहाँ खासी राजाओं और पारंपरिक नेताओं की बैठकें होती थी और नए मुखियाओं का अभिषेक किया जाता था। ये स्थल मोनोलिथ (पत्थर स्मारक) से निहित है, जो एक गौरवशाली अतीत की याद दिलाते हैं, क्योंकि समय इनके चारों ओर धीरे – धीरे गुजरता रहता है।



"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।"

सुमित्रानंदन पंत

मेघालय के झरने



श्रीमती मनीषा थाबाह
लेखाकार

मेघालय की हरी पहाड़ियों में
जब बादल थक कर उतर आते हैं,
तो उनकी आँखों से झरने बहते हैं,
चट्टानों की गोद में संगीत रचते हैं।
हर मोड़ पर जल की कहानी है,
हर बूँद में वर्षा की निशानी है।

नोहकालिकाई की ऊँची पुकार में
प्रकृति का अटूट साहस गूँजता है,
सेवन सिस्टर्स की सात धाराएँ
एक साथ बहकर सौंदर्य रचती हैं।
किनरेम की प्रबल छलाँग
आकाश को धरती से जोड़ देती है,
डैनथ्लेन की शांत धारा
पुरखों की स्मृतियाँ दोहरा देती है।

हरी घाटियों में झरनों की पायल
दिन–रात मधुर स्वर बिखेरती है,
काई से ढकी चट्टानों पर
जल की रेखाएँ चित्र बनाती हैं।
कोहरे की चादर ओढ़े पहाड़
इन धाराओं को सहेज कर रखते हैं,
मानो प्रकृति स्वयं
अपने गीतों की रक्षा कर रही है।



मेघालय के ये झरने
केवल जल की धाराएँ नहीं,
ये जीवन की निरंतरता हैं,
धैर्य, शक्ति और सौम्यता का संगम हैं।
हर गिरती बूँद सिखाती है
कि विनम्र होकर बहना ही
सबसे बड़ा सौंदर्य है।

मेघालय पर्यटन



श्रीमती वीणा कुमारी राय
पत्नी - श्री विजय कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

भारत के उत्तर–पूर्वी भाग में बसा मेघालय प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत खजाना है। "मेघालय" शब्द संस्कृत के दो शब्दों – मेघ (बादल) और आलय (घर) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है "बादलों का घर"। यह नाम इस राज्य के वातावरण को पूरी तरह व्यक्त करता है, क्योंकि यहाँ वर्ष भर बादलों का डेरा रहता है। हरे–भरे पर्वत, गहरी घाटियाँ, झरने, गुफाएँ, नदियाँ और अनोखी जनजातीय संस्कृति मेघालय को पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती हैं।

मेघालय पहाड़ी राज्य है, जो खासी, गारो और जयंतिया पहाड़ियों में विभाजित है। यहाँ की जलवायु शीतल और सुखद रहती है। अत्यधिक वर्षा के कारण यहाँ की धरा सदा हरी–भरी दिखाई देती है। घने वन, बाँस के झुरमुट और दुर्लभ वनस्पतियाँ इस प्रदेश की पहचान है।

शिलांग मेघालय की राजधानी है और इसे "पूर्व का स्कॉटलैंड" कहा जाता है। यहाँ का मौसम वर्ष भर सुहावना रहता है।

- उमियम झील यहाँ का प्रमुख पर्यटन स्थल है, जहाँ नौकायान और पिकनिक का आनंद लिया जा सकता है।
- शिलांग की पहाड़ियों से दिखाई देने वाला बादलों के दृश्य पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं।
- यहाँ के बाजार, विशेषकर पुलिस बाजार, स्थानीय हस्तशिल्प और भोजन के लिए प्रसिद्ध हैं।

चेरापूंजी, जिसे सोहरा भी कहा जाता है। विश्व के सर्वाधिक वर्षा वाले स्थानों में गिना जाता है।

- यहाँ का नोहकालिकाई जलप्रपात भारत के सबसे ऊँचे जलप्रपातों में से एक है।
- चेरापूंजी की गुफाएँ, जैसे मावस्माई गुफा, आरवा गुफा रोमांच प्रेमियों के लिए विशेष आकर्षण हैं।

• वर्षा के समय यहाँ के बादल, झरने और हरियाली मिलकर अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

मेघालय के घने वनों में पाए जाने वाले लिविंग रूट ब्रिज विश्व में अद्वितीय हैं। इन्हें रबड़ के पेड़ों की जड़ों को वर्षों तक दिशा देकर बनाया जाता है। ये पुल अत्यंत मजबूत होते हैं और कई पीढ़ियों तक उपयोग में लाए जाते हैं। यह स्थानीय जनजातियों की बुद्धिमता और प्रकृति के प्रति सम्मान का उत्कृष्ट उदाहरण है।

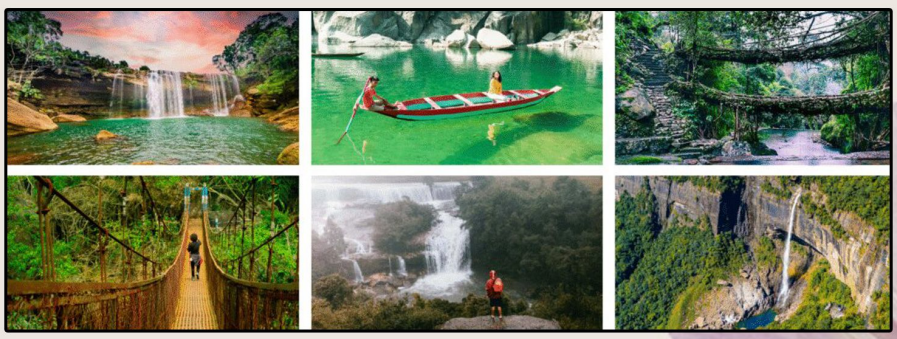
डावकी की उम्गोट नदी अपने क्रिस्टल जैसा साफ पानी के लिए विश्व प्रसिद्ध है। नाव की सवारी करते समय ऐसा लगता है जैसे नाव हवा में तैर रही है। यह स्थान भारत–बांग्लादेश सीमा के निकट स्थित है और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है।

मेघालय की जनसंख्या मुख्यतः खासी, गारो और जयंतिया जनजातियों से मिलकर बनी है। यहाँ की संस्कृति अनोखी है, यहाँ मातृसत्तात्मक व्यवस्था प्रचलित है – संपत्ति और वंश परंपरा माँ की ओर से चलती है। लोक नृत्य, संगीत, पारंपरिक पोशाक और त्यौहार पर्यटकों को विशेष आकर्षित करते हैं।

मेघालय गुफा अन्वेषण और जंगल सफारी जैसे साहसिक गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की गुफाएँ जैसे सिजू गुफा, रोमांच पसंद करने वाले पर्यटकों के लिए स्वर्ग है।

मेघालय प्रकृति प्रेमियों, शांति चाहने वालों और रोमांच के शौकीनों – सभी के लिए एक आदर्श पर्यटन स्थल है। यहाँ की हरियाली, स्वच्छ वातावरण, अद्भुत जलप्रपात, जीवित जड़ पुल और अनोखी संस्कृति इसे भारत के सबसे सुंदर राज्यों में स्थान दिलाती हैं।

मेघालय की यात्रा केवल एक भ्रमण नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ आत्मिक जुड़ाव का अनुभव है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में एक बार इस "बादलों के घर" की यात्रा अवश्य करनी चाहिए।



बादलों का घर, प्रकृति और संस्कृति का अद्भुत संगम – 'मेघालय'



श्रीमती ग्रेसी हथनेउ वाइफेई
लेखाकार

भारत के उत्तरदृपूर्वी क्षेत्र में स्थित मेघालय एक ऐसा राज्य है, जहाँ प्रकृति अपने सबसे सजीव और शुद्ध रूप में दिखाई देती है। "मेघालय" शब्द का अर्थ ही है — बादलों का घर। यह नाम यहाँ के भूगोल, जलवायु और वातावरण को पूर्ण रूप से परिभाषित करता है। ऊँची–नीची पहाड़ियाँ, घने वन, निरंतर बहते झरने, पारदर्शी नदियाँ, रहस्यमयी गुफाएँ और समृद्ध जनजातीय संस्कृति – ये सभी मिलकर मेघालय को भारत के सबसे आकर्षक पर्यटन स्थलों में विशिष्ट स्थान प्रदान करते हैं। मेघालय पर्यटन केवल प्राकृतिक सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन की सादगी, प्रकृति के साथ सामंजस्य और सांस्कृतिक विविधता का अनुभव भी कराता है।

मेघालय की राजधानी शिलांग को "पूर्व का स्कॉटलैंड" कहा जाता है। पहाड़ियों के बीच बसा यह शहर अपनी ठंडी जलवायु, झीलों, उद्यानों और औपनिवेशिक स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है। शिलांग पीक से पूरे शहर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है, वहीं उमियम झील (बरापानी) अपने शांत जल और हरियाली के कारण पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करती है। एलीफेंट फॉल्स, लेडी हैदरी पार्क और वार्ड्स लेक जैसे स्थल शिलांग को एक संपूर्ण पर्यटन केंद्र बनाते हैं। यहाँ आधुनिक जीवन और प्रकृति के बीच संतुलन स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।

मेघालय पर्यटन की पहचान चेरापूंजी (सोहरा) के बिना अधूरी है। विश्व के सर्वाधिक वर्षा वाले स्थानों में शामिल चेरापूंजी अपने भव्य जलप्रपातों और गहरी घाटियों के लिए प्रसिद्ध है। नोहकालिकाई, सेवन सिस्टर्स, किनरेम और डैनथ्लेन जैसे झरने इस क्षेत्र को एक प्राकृतिक रंगमंच का रूप देते हैं। वर्षा ऋतु में यहाँ का सौंदर्य अपने चरम पर होता है, जब पहाड़ियाँ हरियाली से ढक जाती हैं और हर दिशा से जलधाराएँ बहती दिखाई देती हैं। चेरापूंजी केवल देखने का स्थान नहीं, बल्कि वर्षा और जल के महत्व को समझने का अनुभव भी है।

मेघालय की एक अनूठी विशेषता है — जीवित जड़ पुल खासी और जयंतिया जनजातियों द्वारा पीढ़ियों से विकसित ये पुल वृक्षों की जीवित जड़ों से बनाए जाते हैं। नोंगरीयात और आसपास के क्षेत्रों में स्थित ये पुल मानव और प्रकृति के सहअस्तित्व का श्रेष्ठ उदाहरण हैं। ये पुल न केवल मजबूत और टिकाऊ हैं, बल्कि पर्यावरण–अनुकूल जीवनशैली का भी संदेश देते हैं। पर्यटन के साथ–साथ ये पुल मेघालय की सांस्कृतिक बुद्धिमत्ता को भी दर्शाते हैं।

दक्षिण मेघालय में स्थित डावकी (उमंगोट नदी) मेघालय पर्यटन का एक और प्रमुख आकर्षण है। इस नदी का जल अपनी अद्भुत पारदर्शिता के लिए विश्वविख्यात है। यहाँ नौका–विहार करते समय ऐसा प्रतीत होता है मानो नावें पानी पर नहीं, बल्कि हवा में तैर रही हों। भारत–बांग्लादेश सीमा के समीप बहती यह नदी भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। डावकी पर्यटन स्वच्छता, शांति और प्राकृतिक संतुलन का प्रतीक बन चुका है।

मेघालय को गुफाओं का राज्य भी कहा जाता है। यहाँ स्थित मावस्माई, सिजू, क्रेम लियात प्राह और क्रेम मावमलुह जैसी गुफाएँ साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देती हैं। ये गुफाएँ न केवल भूवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि रोमांच पसंद करने वाले पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र हैं। चूना–पत्थर से बनी ये गुफाएँ लाखों वर्षों की प्राकृतिक प्रक्रियाओं की कहानी कहती हैं।

मेघालय पर्यटन में मावल्यॉन्ग गाँव का विशेष स्थान है, जिसे एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव माना जाता है। स्वच्छता, अनुशासन और सामुदायिक सहभागिता यहाँ की जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा हैं। यह गाँव दर्शाता है कि स्वच्छता केवल सरकारी प्रयास नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी से ही संभव है। मावल्यॉन्ग का उदाहरण पर्यटन के साथ–साथ सामाजिक प्रेरणा भी प्रदान करता है।

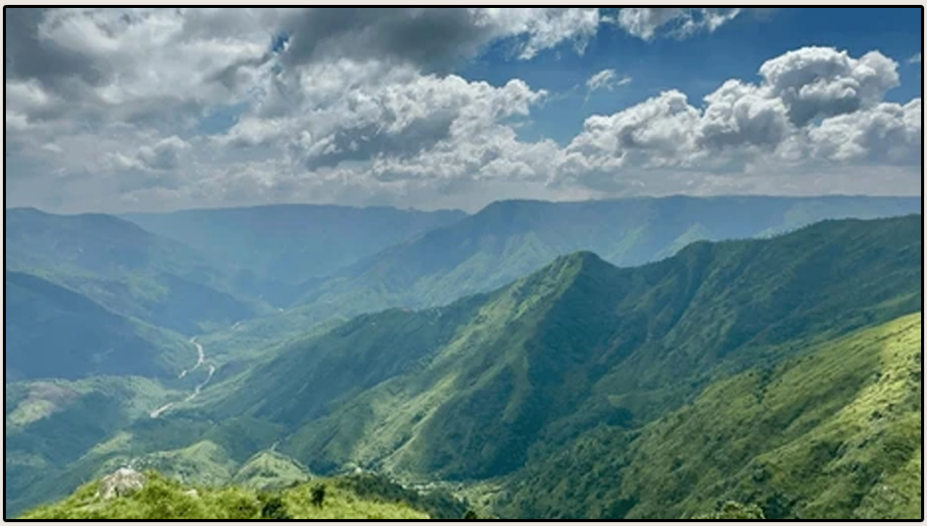
प्राकृतिक सौंदर्य के साथ–साथ मेघालय की संस्कृति और परंपराएँ भी पर्यटन को समृद्ध बनाती हैं। खासी, गारो और जयंतिया जनजातियाँ यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ हैं। इनकी मातृसत्तात्मक समाज–व्यवस्था, लोकनृत्य, संगीत, पर्व–त्योहार और पारंपरिक वेशभूषा मेघालय को सांस्कृतिक दृष्टि से अनूठा बनाती है। शाड सुक मिंसीम और वांगाला जैसे त्योहार यहाँ की सांस्कृतिक विविधता को जीवंत रूप में प्रस्तुत करते हैं।

मेघालय का खान–पान भी पर्यटन अनुभव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। स्थानीय व्यंजन सरल, पौष्टिक और प्राकृतिक होते हैं। चावल, मांस, बाँस की कोपलें और स्थानीय जड़ी–बूटियाँ यहाँ के भोजन में प्रमुख रूप से प्रयोग की जाती हैं। पारंपरिक भोजन यहाँ की जीवनशैली और प्रकृति से गहरे संबंध को दर्शाता है।

साहसिक पर्यटन के क्षेत्र में भी मेघालय तेजी से उभर रहा है। ट्रेकिंग, रॉक क्लाइम्बिंग, नदी में नौकायन, गुफा अन्वेषण और पर्वतीय भ्रमण जैसी गतिविधियाँ युवाओं को विशेष रूप से आकर्षित करती हैं। लाइटलुम कैन्यन जैसी जगहें उन पर्यटकों के लिए आदर्श हैं, जो प्रकृति की भव्यता को शांत वातावरण में अनुभव करना चाहते हैं।

मेघालय पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है—पर्यावरण संरक्षण। यहाँ के लोग प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार मानते हैं। पवित्र उपवन इसका सजीव उदाहरण हैं, जहाँ वृक्षों और वन्यजीवों की रक्षा धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताओं से जुड़ी हुई है। यह दृष्टिकोण आधुनिक पर्यटन के लिए एक महत्वपूर्ण संदेश देता है।

मेघालय पर्यटन केवल यात्रा का अनुभव नहीं, बल्कि प्रकृति, संस्कृति और जीवन–मूल्यों से संवाद का अवसर है। यहाँ की पहाड़ियाँ शांति सिखाती हैं, झरने निरंतरता का पाठ पढ़ाते हैं और लोग सादगी में सुंदरता का अर्थ समझाते हैं। मेघालय हमें यह याद दिलाता है कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन संभव है, यदि हम प्रकृति को समझने और सम्मान देने का दृष्टिकोण अपनाएँ। बादलों के इस घर से लौटते समय पर्यटक केवल स्मृतियाँ नहीं, बल्कि एक नई दृष्टि भी अपने साथ लेकर जाते हैं – जीवन को प्रकृति के साथ संतुलन में जीने की दृष्टि।



**"मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ,
पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो,
ये मैं सह नहीं सकता।"**

आचार्य विनोबा भावे

मेघालय – जहाँ बादल धरती से बातें करते हैं



श्रीमती मेघा रानी
पत्नी – श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

भागदौड़ भरी जिंदगी, शोर से भरे शहर और लगातार बढ़ता तनाव इन सबसे दूर जाने की चाह हर इंसान के मन में कभी न कभी जरूर उठती है। ऐसे ही एक शाम राहुल अपने कमरे की खिड़की से बाहर देख रहा था। आसमान धुँधला था, हवा भारी लग रही थी। तभी उसके हाथ में आई एक यात्रा पत्रिका, जिसमें लिखा था "मेघालय : बादलों का घर"। बस उसी पल उसने तय कर लिया कि वह मेघालय जाएगा।

कुछ दिनों बाद राहुल गुवाहाटी से शिलांग की ओर निकल पड़ा। जैसे–जैसे गाड़ी पहाड़ों की ओर बढ़ती गई, हवा ठंडी होती गई और मन हल्का। रास्ते में बादल पहाड़ों को ऐसे ढक रहे थे, मानो उन्हें अपनी बाहों में समेट रहे हों। पहली ही झलक में मेघालय ने राहुल का दिल जीत लिया।

शिलांग : पहाड़ों की रानी

शिलांग पहुँचते ही सबसे पहले वह शिलांग पीक गया। ऊपर से पूरा शहर छोटा–सा खिलौना लग रहा था। दूर–दूर तक फैली हरियाली और बहती हवा ने उसे एहसास कराया कि वह सचमुच किसी और दुनिया में आ गया है। वार्ड्स लेक के शांत पानी में आसमान का प्रतिबिंब देखकर राहुल देर तक बैठा रहा। शाम को पुलिस बाजार की चहल–पहल, स्थानीय खाने की खुशबू और लोगों की मुस्कान ने उसे अपनापन महसूस कराया।

चेरापूंजी : बारिश की धरती

अगले दिन राहुल चेरापूंजी की ओर निकला। यह वही जगह थी, जहाँ बादल सबसे पहले धरती को छूते हैं। रास्ते भर हरियाली, गहरी घाटियाँ और झरने उसका स्वागत कर रहे थे।

नोहकालिकाई जलप्रपात को देखकर उसकी आँखें भर आईं। इतनी ऊँचाई से गिरता पानी, मानो आसमान धरती से मिलने आ रहा हो। वहाँ होकर उसे लगा कि प्रकृति अपनी पूरी शक्ति और सुंदरता एक साथ दिखा रही है।

जीवित जड़ों का चमत्कार

मेघालय की सबसे अनोखी पहचान है – लिविंग रूट ब्रिज। राहुल ने नॉन्ग्रियाट गाँव तक का कठिन सफर तय किया। सैकड़ों सीढ़ियाँ उतरते हुए, पसीना और थकान दोनों थे, लेकिन जंगल की खुशबू और पक्षियों की आवाज उसे आगे बढ़ाती रही। जब उसने डबल डेकर लिविंग रूट ब्रिज देखा, तो वह अवाक रह गया। पेड़ों की जड़ों से बना यह पुल सिर्फ रास्ता नहीं था, बल्कि पीढ़ियों की मेहनत और प्रकृति के साथ इंसान के सामंजस्य की कहानी था।

डावकी : पानी नहीं, आईना

यात्रा के अंतिम दिनों में राहुल पहुँचा डावकी । डावकी नदी का पानी इतना साफ था कि नाव हवा में तैरती हुई लग रही थी। नाव चलाते हुए उसने अपने प्रतिबिंब को पानी में देखा और मन ही मन मुस्कुरा दिया। उस पल उसे एहसास हुआ कि सच्ची खुशी सादगी में छिपी होती है।

लोगों और संस्कृति की गर्माहट

मेघालय के लोग जितने सरल थे, उतने ही आत्मीय। खासी, गारो और जयंतीया जनजातियों की संस्कृति, लोकगीत, बाँस से बने घर और पारंपरिक भोजन – सब कुछ राहुल के दिल में बस गया। यहाँ महिलाओं का सम्मान और समाज में उनकी अहम भूमिका देखकर उसे गर्व महसूस हुआ।

विदाई का पल

जब वापसी का समय आया, तो राहुल का मन भारी हो गया। वह मेघालय से सिर्फ तस्वीरें नहीं, बल्कि शांति, ताजगी और नई सोच लेकर लौट रहा था। मेघालय ने उसे सिखाया कि जीवन की असली सुंदरता ऊँची इमारतों में नहीं, बल्कि बहते झरनों, शांत पहाड़ों और मुस्कुराते चेहरों में होती है।

राहुल जानता था, यह विदाई नहीं थी, बल्कि एक नए रिश्ते की शुरुआत थी।

मेघालय हमेशा उसे वापस बुलाएगा... बादलों के साथ।



मेघालय : सुकून की वादी



श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

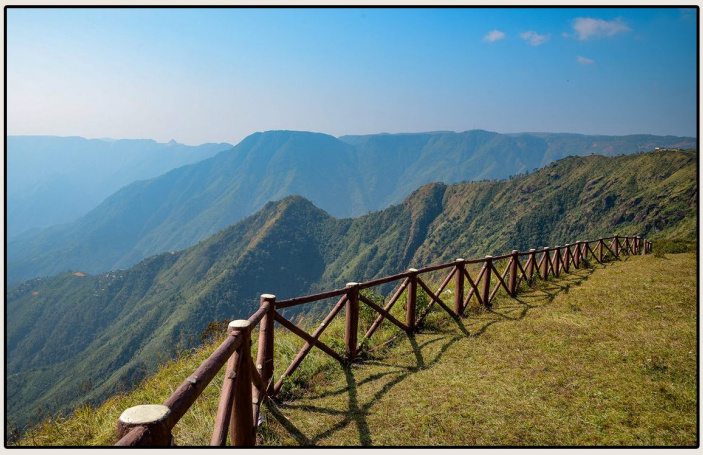
जहाँ बादल घर बनाकर रहते हैं,
वहाँ के नजारे हमें बाँध लेते हैं।
पहाड़ों पर सीढ़ियाँ बनती दिखती हैं,
मेघालय की शान जग चमकती दिखती हैं।

डॉकी में उस उम्गोत नदी का क्या कहना,
पानी इतना साफ कि तली दिखे बस जाना।
नाव समंदर में नहीं, हवा में तैरती है,
इस जगह की खूबसूरती दिल में घर करती है।

चेरापूंजी की वो बूंदें बरसती हैं,
बारिश की रागिनी यहाँ छन लगती हैं।
ऊँचे–ऊँचे झरने गर्जन करते हैं,
जड़ों का वो पुल है अजब कहानी,
पीढ़ियों ने मिलकर बनाई है ये जबानी।
बेट के पुल पर चलना है एक अनुभव,
याद रहे जाते–जाते ये सफर भी।

शिलॉन्ग की सड़कें और संगीत का रंग,
यहाँ का माहौल है बिल्कुल अलग।
ना कोई शोर–शराबा, बस ठंडी हवा,
मेघालय बुलाता है आपको यारों जरा।

एक बार जो आएगा इस धरती पर,
जीवन भर वो खुशियों के गीत गाएगा।



चेरापूंजी : झरनों की श्रृंखला के बीच एक स्मरणीय यात्रा–वृत्तांत



श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.
कनिष्ठ अनुवादक

मेघालय के पूर्वी खासी पहाड़ियों में स्थित चेरापूंजी की यात्रा मेरे लिए केवल एक पर्यटन अनुभव नहीं, बल्कि प्रकृति के सबसे सजीव और शक्तिशाली रूप से साक्षात्कार थी। विश्व के सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में गिने जाने वाला यह स्थान अपने साथ जो सबसे अनमोल उपहार लाता है, वह है – जल। शिलांग से चेरापूंजी तक की सड़क एक ऐसे प्राकृतिक गलियारे की तरह है, जहाँ हर कुछ किलोमीटर पर झरने, घाटियाँ और बादलों से ढके पहाड़ यात्रियों का स्वागत करते हैं। इस यात्रा–वृत्तांत में चेरापूंजी तक पहुँचने का मार्ग और उस पर पड़ने वाले प्रमुख जलप्रपात स्वयं एक कहानी बन जाते हैं।

यात्रा की शुरुआत शिलांग से होती है, जिसे मेघालय की राजधानी और पहाड़ियों का प्रवेश द्वार कहा जाता है। यहाँ से निकलते ही वातावरण में ठंडक और हरियाली का विस्तार दिखाई देने लगता है। कुछ ही दूरी पर स्थित एलीफेंट फॉल्स इस मार्ग का पहला प्रमुख जलप्रपात है। तीन स्तरों में गिरता यह झरना अपनी संरचना और निरंतर जलप्रवाह के कारण विशेष महत्व रखता है। चट्टानों पर गिरता जल यहाँ की भू–आकृतिक बनावट को दर्शाता है और यह संकेत देता है कि आगे की यात्रा जल और वर्षा से भरपूर होने वाली है।

आगे बढ़ते हुए जैसे–जैसे सड़क पहाड़ियों के बीच गहराई में प्रवेश करती है, वातावरण और अधिक शांत और नमी से भरा होता जाता है। इसी मार्ग पर स्थित "वाह काबा जलप्रपात" दूर से ही अपनी ऊँचाई और सौम्यता के कारण ध्यान आकर्षित करता है। यह झरना अपेक्षाकृत कम चर्चित है, परंतु मानसून के समय इसका जलप्रवाह अत्यंत प्रभावशाली हो जाता है। घने वनों के बीच गिरता यह जलप्रपात प्रकृति की उस शांत शक्ति का प्रतीक है, जो बिना शोर किए अपना प्रभाव छोड़ जाती है।

चेरापूंजी के निकट पहुँचते ही दृश्य तेजी से बदलने लगते हैं। घाटियाँ और अधिक गहरी, पहाड़ और अधिक ऊँचे तथा बादल और अधिक निकट महसूस होते हैं। इसी क्षेत्र में स्थित "सेवन सिस्टर्स जलप्रपात", जिसे स्थानीय रूप से नोहस्नियांग फॉल्स कहा जाता है, यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। सात समानांतर धाराओं में विभक्त यह झरना वर्षा ऋतु में अपनी पूर्ण भव्यता में दिखाई देता है। पहाड़ की चट्टानों से एक साथ गिरती जलधाराएँ ऐसा दृश्य प्रस्तुत करती हैं मानो प्रकृति ने स्वयं मंच सजाकर अपनी कला का प्रदर्शन किया हो।

चेरापूंजी का सबसे प्रतिष्ठित और विश्वविख्यात जलप्रपात "नोहकालिकाई" है। लगभग 340 मीटर की ऊँचाई से गिरता यह झरना भारत के सबसे ऊँचे जलप्रपातों में से एक है। ऊँचे पठार से नीचे गिरता जल जब गहरे हरे रंग के कुंड में समाहित होता है, तो वह दृश्य प्रकृति की शक्ति और सौंदर्य दोनों का चरम रूप प्रस्तुत करता है। इस जलप्रपात से जुड़ी स्थानीय लोककथा इसे सांस्कृतिक गहराई भी प्रदान करती है, जिससे यह केवल एक प्राकृतिक स्थल नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्मृतियों का हिस्सा बन जाता है।

नोहकालिकाई के अतिरिक्त, चेरापूंजी क्षेत्र में स्थित "किनरेम जलप्रपात" भी अपनी ऊँचाई और वेग के लिए जाना जाता है। यह झरना विशेष रूप से दूर से दिखाई देता है और वर्षा के समय इसकी धाराएँ अत्यंत शक्तिशाली रूप ले लेती हैं। घने वनों और बादलों के बीच गिरता यह जलप्रपात इस क्षेत्र की अत्यधिक वर्षा का सजीव प्रमाण है।

एक अन्य महत्वपूर्ण जलप्रपात "डैनथ्लेन फॉल्स" है, जो खासी लोककथाओं और पौराणिक मान्यताओं से जुड़ा हुआ है। यह झरना अपेक्षाकृत विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है और चट्टानों पर फैलकर बहता हुआ एक अलग ही दृश्य प्रस्तुत करता है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, यह स्थान ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रहा है।

इन प्रमुख जलप्रपातों के अतिरिक्त, शिलांग से चेरापूंजी तक के मार्ग में असंख्य छोटे–बड़े मौसमी झरने देखने को मिलते हैं। वर्षा के समय ये झरने अचानक पहाड़ियों की ढलानों से प्रकट हो जाते हैं और कुछ ही दूरी पर किसी नदी या घाटी में विलीन हो जाते हैं। ये अस्थायी जलप्रपात इस क्षेत्र की जल–संपन्नता और वर्षा की निरंतरता को दर्शाते हैं।

चेरापूंजी स्वयं में केवल झरनों का नगर नहीं, बल्कि मानव और प्रकृति के संतुलित सहअस्तित्व का उदाहरण है। यहाँ के प्रसिद्ध जीवित जड़ पुल इस बात का प्रमाण हैं कि स्थानीय खासी समुदाय ने प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं, बल्कि सहयोग का मार्ग चुना है। पीढ़ियों से विकसित इन पुलों में वृक्षों की जड़ों का उपयोग किया गया है, जो आज भी यात्रियों को सुरक्षित मार्ग प्रदान करते हैं।

चेरापूंजी का मौसम इस यात्रा का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। अचानक होने वाली वर्षा, घने कोहरे और फिर क्षणिक धूप—यह निरंतर परिवर्तन यात्रा को और भी जीवंत बना देता है। यहाँ वर्षा किसी बाधा की तरह नहीं, बल्कि जीवन की स्वाभाविक लय के रूप में अनुभव होती है।

सांझ के समय चेरापूंजी का वातावरण अत्यंत शांत और आत्मीय हो जाता है। बादल पहाड़ियों को स्पर्श करते प्रतीत होते हैं, घरों की रोशनी धुंध में घुल जाती है और चारों ओर एक गहरी निस्तब्धता फैल जाती है। उस क्षण यह अनुभव होता है कि प्रकृति ने यहाँ समय की गति को धीमा कर दिया है।

यह यात्रा–वृत्तांत केवल चेरापूंजी पहुँचने की कहानी नहीं, बल्कि उस मार्ग की भी कथा है जो झरनों, घाटियों और वर्षा के बीच से होकर गुजरता है। चेरापूंजी हमें यह सिखाता है कि प्रकृति का सौंदर्य किसी एक स्थल तक सीमित नहीं होता, बल्कि यात्रा के हर चरण में बिखरा होता है।

शिलांग से चेरापूंजी तक की यह यात्रा झरनों की एक निरंतर श्रृंखला की तरह है, जहाँ प्रत्येक जलप्रपात अपनी अलग पहचान और कहानी रखता है। यह यात्रा मेरे लिए प्रकृति से संवाद, शांति का अनुभव और पर्यावरणीय संतुलन की प्रेरणा बन गई। चेरापूंजी की स्मृतियाँ मेरे मन में सदैव वर्षा की ध्वनि, झरनों की गूंज और बादलों की नमी के साथ जीवित रहेंगी – एक ऐसी यात्रा के रूप में, जो केवल देखी नहीं गई, बल्कि गहराई से महसूस की गई।



डावकी नदी : पारदर्शी जलधारा



सुश्री सबिता चक्रवर्ती
डी.ई.ओ. (आउटसोर्स)

मेघालय के दक्षिण–पश्चिमी भाग में स्थित डावकी नदी, जिसे स्थानीय रूप से उमंगोट नदी के नाम से जाना जाता है, भारत की उन विरल प्राकृतिक धरोहरों में से एक है जहाँ प्रकृति अपनी शुद्धता के साथ पूर्ण गरिमा में दिखाई देती है। यह नदी केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन, सांस्कृतिक सहअस्तित्व और प्राकृतिक सौंदर्य का जीवंत प्रतीक है। डावकी की यात्रा मेरे लिए आधुनिक जीवन की जटिलताओं से बाहर निकलकर प्रकृति के सहज और पारदर्शी रूप से जुड़ने का अनुभव रही।

शिलांग से डावकी की ओर जाने वाला मार्ग स्वयं में अत्यंत आकर्षक है। घुमावदार पहाड़ी सड़कें, गहरी घाटियाँ, घने वन और छोटे–छोटे ग्रामीण बसेरे इस यात्रा को एक दृश्यात्मक अनुभव बना देते हैं। रास्ते में बहती ठंडी हवा और हरियाली से भरा वातावरण मन को धीरे–धीरे शांति की ओर ले जाता है। जैसे–जैसे डावकी निकट आती है, वातावरण में एक विशेष प्रकार की निस्तब्धता महसूस होने लगती है, मानो प्रकृति स्वयं आगंतुकों का स्वागत कर रही हो।

डावकी पहुँचते ही उमंगोट नदी का दृश्य यात्रियों को विस्मय में डाल देता है। नदी का जल इतना स्वच्छ और पारदर्शी है कि उसकी गहराई का अनुमान लगाना कठिन हो जाता है। तलहटी में बिछे कंकड़–पत्थर, जल में हिलते पौधे और मछलियाँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। इस पारदर्शिता के कारण नदी में तैरती नावें ऐसा आभास देती हैं मानो वे जल की सतह पर नहीं, बल्कि हवा में तैर रही हों। यह दृश्य डावकी नदी को विश्व के सबसे स्वच्छ और सुंदर जलस्रोतों में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

नदी में नौका–विहार डावकी यात्रा का प्रमुख आकर्षण है। शांत और स्वच्छ जल पर नाव धीरे–धीरे आगे बढ़ती है, चारों ओर पहाड़ों की हरियाली, नीला आकाश और बादलों की परछाइयाँ जल में प्रतिबिंबित होती दिखाई देती हैं। यह अनुभव केवल दृश्य–सुख तक सीमित नहीं रहता, बल्कि मन को गहराई से छूता है। यहाँ प्रकृति बिना किसी शोर–शराबे के अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है और यात्रियों को आत्मचिंतन का अवसर प्रदान करती है।

डावकी नदी का भौगोलिक महत्व भी उल्लेखनीय है। यह नदी भारतदृबांग्लादेश की अंतरराष्ट्रीय सीमा के समीप बहती है। नदी के किनारे लगे सीमा–स्तंभ यह दर्शाते हैं कि राजनीतिक सीमाएँ चाहे कितनी भी स्पष्ट क्यों न हों, प्रकृति किसी रेखा में नहीं बंधती। उमंगोट नदी दोनों देशों की साझा प्राकृतिक धरोहर के रूप में निरंतर बहती रहती है और यह संदेश देती है कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण सामूहिक उत्तरदायित्व है।

डावकी गाँव और आसपास का क्षेत्र स्थानीय खासी और जयंतिया समुदायों का निवास स्थल है। इन समुदायों का जीवन नदी और प्रकृति से गहराई से जुड़ा हुआ है। उनकी सरल जीवनशैली, स्वच्छता के प्रति सजगता और पर्यावरण के प्रति सम्मान इस क्षेत्र की सबसे बड़ी पूँजी है। स्थानीय लोग पर्यटन के महत्व को समझते हुए भी प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने पर विशेष ध्यान देते हैं। यही कारण है कि डावकी नदी आज भी अपनी स्वच्छता और सौंदर्य को बनाए रखने में सफल रही है।

पर्यटन के बढ़ते प्रभाव के बीच डावकी नदी पर्यावरण संरक्षण का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है। यहाँ प्लास्टिक के उपयोग पर नियंत्रण, नदी की स्वच्छता बनाए रखने के प्रयास और स्थानीय समुदाय की सहभागिता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह स्थान दर्शाता है कि यदि पर्यटन और संरक्षण के बीच संतुलन रखा जाए, तो प्राकृतिक धरोहरों को लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

सांझ के समय डावकी नदी का स्वरूप और भी मनोहारी हो जाता है। ढलते सूर्य की किरणें जल पर पड़कर उसे स्वर्णिम आभा प्रदान करती हैं। धीरे–धीरे अंधकार फैलने लगता है, पहाड़ों की परछाइयाँ गहरी हो जाती हैं और वातावरण में एक गहरी शांति उतर आती है। उस क्षण ऐसा प्रतीत होता है मानो समय कुछ देर के लिए थम गया हो। यह अनुभूति डावकी नदी को केवल देखने योग्य स्थल नहीं, बल्कि महसूस करने योग्य अनुभव बना देती है।

डावकी नदी की यह यात्रा केवल एक यात्रा–वृत्तांत नहीं, बल्कि प्रकृति से सीखने का अवसर भी है। यह नदी हमें सिखाती है कि स्वच्छता केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि जीवनशैली होनी चाहिए। पारदर्शी जलधारा की तरह यदि हमारे विचार और कर्म भी निर्मल हों, तो विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन संभव है।

डावकी नदी (उम्गोट) एक ऐसा स्थल है जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक सरलता और पर्यावरणीय चेतना एक साथ प्रवाहित होती हैं। यह नदी आधुनिक भारत के लिए एक प्रेरणा है – कि प्रगति के मार्ग पर चलते हुए भी प्रकृति की शुद्धता और गरिमा को संरक्षित रखा जा सकता है। डावकी नदी की स्मृति मेरे लिए उस पारदर्शी जल की तरह है, जो मन में गहराई तक उतरकर लंबे समय तक अपनी शीतलता बनाए रखती है।



मेघालय की गोद में



श्रीमती मेघा रानी
पत्नी – श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी



मेघों की धरती, मेघालय प्यारा,
हरियाली का है यहाँ सहारा।
झरनों की धुन, नदियों का गान,
प्रकृति का अनुपम है वरदान।

चेरापूंजी की वर्षा निराली,
हर बूँद में छिपी है खुशहाली।
लिविंग रूट ब्रिज की अद्भुत कला,
मानव और प्रकृति का सुंदर मिला।

पहाड़ों पर फैली धुंध की चादर,
सपनों सा लगता हर एक मंजर।
गुफाओं में छिपे रहस्य पुराने,
पर्यटक आते खोजने तराने।

संस्कृति यहाँ की रंगों से भरी,
नृत्य और गीतों में जीवन झरी।
मेघालय बुलाता खुले दिल से,
आओ घूमो इसके कण–कण में।

मेघालय यात्रा : बादलों के घर में प्रकृति का महाकाव्य

श्री अजित सिंह
वरिष्ठ अनुवादक

मेघालय – नाम लेते ही मन में बादलों से घिरी पहाड़ियाँ, हरित वनस्पति से आच्छादित घाटियाँ, झरनों की निर्झरिणी ध्वनि और आकाश से उतरती शीतल वर्षा की स्मृति जीवित हो उठती है। पूर्वोत्तर भारत की इस अद्‌भुत भूमि को "बादलों का घर" यूँ ही नहीं कहा जाता। यहाँ प्रकृति केवल दृश्य नहीं, बल्कि अनुभव हैय केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि आत्मा की अनुभूति है।

मेरी यह यात्रा एक साधारण पर्यटन नहीं थी; यह प्रकृति के साथ संवाद था, आत्मा का स्पर्श था। इस यात्रा के दो पड़ाव थे — फि–फि फॉल्स एवं गार्डन ऑफ केव्स। इन स्थानों ने मेरे हृदय में ऐसी छाप छोड़ी, जो शब्दों से परे हैय फिर भी उन्हें शब्दों में पिरोने का यह विनम्र प्रयास है।

जयंतिया पहाड़ियों की ओर बढ़ते हुए मार्ग जैसे किसी हरे स्वप्न में प्रवेश कर रहा था। सड़क के दोनों ओर फैली घनी हरियाली, दूर–दूर तक फैले पहाड़ और उनके ऊपर आलस्य से तैरते श्वेत बादल, जैसे प्रकृति ने स्वयं अपने लिए चित्र उकेरा हो।

फि–फि फॉल्स तक पहुँचने के लिए मुख्य मार्ग से हटकर हमें कच्चे रास्ते और फिर पैदल पगडंडी का सहारा लेना पड़ा। वह पगडंडी जैसे किसी गुप्त रहस्य की ओर ले जा रही थी। पक्षियों की मधुर चहचहाहट और हवा में घुली गीली मिट्टी की सुगंध मन को अज्ञात उत्साह से भर रही थी।

कुछ दूर चलने के पश्चात जब मैं उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ से झरना स्पष्ट दिखाई देता था, तो मेरे कदम स्वयं रुक गए। ऊँचाई से गिरता निर्मल जल, जिसकी धाराएँ सूर्य के प्रकाश में चाँदी–सी चमक रही थीं, वह दृश्य अत्यंत सुंदर था। झरने का जल नीचे एक प्राकृतिक कुंड में एकत्र होता था, जिसका रंग गहरे फिरोजी नील का था।

मैंने उस शीतल जल को अपने हाथों में भरकर अनुभव किया। वह जल केवल शरीर को ही नहीं, आत्मा को भी शीतलता प्रदान कर रहा था। वहाँ कोई भीड़ नहीं थी, कोई कोलाहल नहीं, केवल प्रकृति की मौन वाणी। उस एकांत में बैठकर मैंने जाना कि शांति क्या होती है। फि–फि फॉल्स मेरे लिए केवल एक पर्यटन स्थल नहीं रहाय वह मेरे अंतर्मन का आश्रय बन गया।

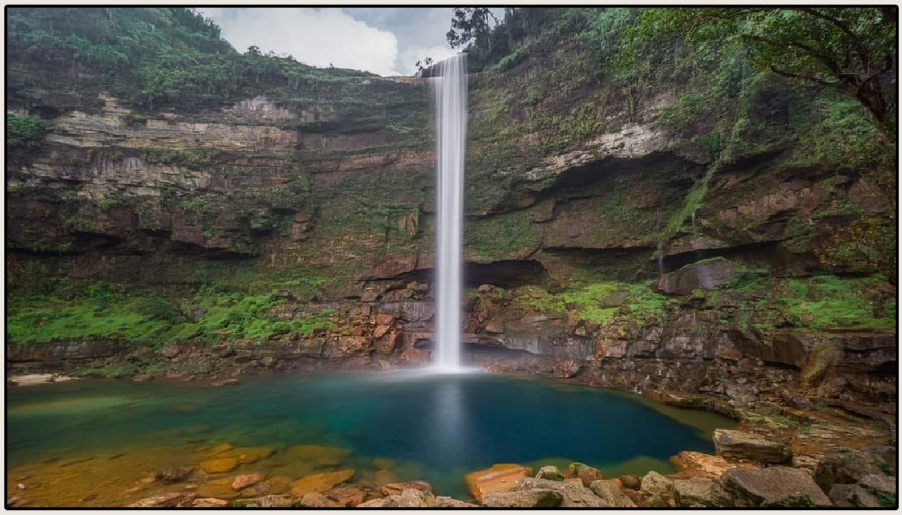
इसके पश्चात मेरी यात्रा का अगला पड़ाव था, लाइटमावसियांग का प्रसिद्ध गार्डन ऑफ केव्स। नाम सुनते ही मन में उत्सुकता जागी थी कि यह कैसा उपवन होगा, जहाँ गुफाएँ हों। प्रवेश करते ही ऐसा प्रतीत हुआ मानो किसी प्राचीन कथा–लोक में आ गया हूँ। विशाल चट्टानों के मध्य संकरी पगडंडियाँ, जिनके किनारे काई जमी हुई थी, और उनके बीच से बहती जलधाराएँकृप्रकृति का यह स्थापत्य किसी मानव–निर्मित उद्यान से कहीं अधिक जीवंत और आकर्षक था।

यहाँ अनेक छोटी–बड़ी गुफाएँ हैं, जिनमें प्रवेश करते समय मन में हल्का भय और उत्सुकता दोनों साथ–साथ चलते हैं। एक गुफा के भीतर प्रवेश करते ही शीतल हवा का झोंका मेरे चेहरे से टकराया। भीतर का अंधकार और बाहर से आती प्रकाश की रेखाएँ मिलकर एक अद्‌भुत दृश्य उत्पन्न कर रही थीं। ऐसा लगा जैसे प्रकृति स्वयं अपनी कला का प्रदर्शन कर रही हो।

एक स्थान पर पत्थरों के बीच से गिरती जलधारा ने एक लघु जलप्रपात का रूप ले लिया था। उसकी मधुर ध्वनि गुफाओं की दीवारों से टकराकर एक संगीत–सा रच रही थी। गार्डन ऑफ केव्स ने मुझे यह अनुभव कराया कि प्रकृति केवल बाहर नहीं, भीतर भी रहस्य समेटे हुए है। जैसे इन गुफाओं के भीतर अंधकार और प्रकाश का संगम है, वैसे ही जीवन में भी अनुभवों का समन्वय है।

मेघालय की इस यात्रा ने मुझे केवल दृश्य आनंद ही नहीं दिया, बल्कि आत्मिक संतोष भी प्रदान किया। फि फि फॉल्स की नीरवता ने मुझे एकांत का महत्व समझायाय गार्डन ऑफ केव्स ने रहस्य और सौंदर्य का संगम दिखाया।

यह यात्रा मेरे लिए एक आध्यात्मिक अनुभव बन गई। मैंने जाना कि प्रकृति के निकट जाकर मनुष्य स्वयं को अधिक स्पष्टता से समझ पाता है। मेघालय की पहाड़ियों, झरनों और नदियों ने मुझे यह सिखाया कि जीवन में सौंदर्य हर ओर है, बस उसे देखने की दृष्टि चाहिए। जब मैं वहाँ से लौट रहा था, तो ऐसा लगा जैसे मैं केवल स्मृतियाँ ही नहीं, बल्कि प्रकृति का एक अंश अपने साथ लेकर जा रहा हूँ।



'क्रेम चिम्पे' : मेघालय की रहस्यमयी गुफा



श्री पार्थ ज्योति दे
सहायक लेखा अधिकारी

मेघालय को यदि "बादलों का घर" कहा जाता है, तो उसकी आत्मा उसकी गुफाओं में बसती है। यह राज्य केवल झरनों, नदियों और हरियाली के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है, बल्कि यहाँ की रहस्यमयी गुफाएँ (क्रेम) इसे एक विशिष्ट पहचान देती हैं। इन्हीं गुफाओं में से एक है क्रेम चिम्पे जो पूर्वी खासी पहाड़ी जिले में स्थित एक कम–प्रसिद्ध लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण प्राकृतिक गुफा है। यह गुफा रोमांच, भूविज्ञान और प्राकृतिक सौंदर्य – तीनों का अनोखा संगम प्रस्तुत करती है।

क्रेम चिम्पे तक पहुँचने की यात्रा स्वयं में एक अनुभव है। शिलांग से निकलकर घुमावदार पहाड़ी रास्तों, घने वनों और छोटे–छोटे खासी गाँवों से गुजरते हुए जब यात्री इस क्षेत्र में पहुँचता है, तो आधुनिक दुनिया की हलचल पीछे छूट जाती है। यहाँ का शांत वातावरण और स्वच्छ हवा मन को प्रकृति के निकट ले आती है। गुफा का प्रवेश द्वार साधारण प्रतीत होता है, परंतु उसके भीतर छिपी दुनिया असाधारण है।

भूवैज्ञानिक दृष्टि से क्रेम चिम्पे एक चूना–पत्थर से बनी गुफा है, जिसका निर्माण लाखों वर्षों में जल–क्षरण और प्राकृतिक रासायनिक प्रक्रियाओं के माध्यम से हुआ है। गुफा के भीतर प्रवेश करते ही विशाल कक्ष, संकरे मार्ग, ऊँची छतें और प्राकृतिक स्तंभ दिखाई देने लगते हैं। छत से लटकते स्टैलेक्टाइट्स और जमीन से उठते स्टैलेग्माइट्स इस गुफा को एक प्राकृतिक शिल्पकला का रूप प्रदान करते हैं। ये संरचनाएँ समय की धीमी गति से बनी ऐसी कृतियाँ हैं, जिन्हें देखकर प्रकृति की धैर्यशील शक्ति का आभास होता है।

क्रेम चिम्पे की विशेषता यह है कि यह गुफा अभी भी अपेक्षाकृत कम व्यावसायिक पर्यटन का हिस्सा है। यहाँ कृत्रिम रोशनी या पक्के मार्ग नहीं हैं, जिससे इसका प्राकृतिक स्वरूप लगभग अक्षुण्ण बना हुआ है। यही कारण है कि यह गुफा साहसिक यात्रियों और शोधकर्ताओं के लिए अधिक आकर्षक है। टॉर्च की रोशनी में जब गुफा की दीवारें चमकती हैं और जल–बूँदों की आवाज गूंजती है, तो वातावरण रहस्यमय और रोमांचक हो उठता है।

गुफा के भीतर कई स्थानों पर जल की छोटी धाराएँ और प्राकृतिक कुंड देखने को मिलते हैं। वर्षा ऋतु में इनका जलस्तर बढ़ जाता है, जिससे गुफा और भी चुनौतीपूर्ण बन जाती है। यह अनुभव यात्रियों को यह समझने का अवसर देता है कि मेघालय में वर्षा केवल सतह पर ही नहीं, बल्कि भूमिगत संरचनाओं को भी आकार देती है। यही कारण है कि मेघालय को विश्व के सबसे अधिक गुफा–समृद्ध क्षेत्रों में गिना जाता है।

क्रेम चिम्पे का सांस्कृतिक महत्व भी कम नहीं है। खासी समुदाय के लिए गुफाएँ केवल भौगोलिक संरचनाएँ नहीं, बल्कि प्रकृति की जीवित धरोहर हैं। स्थानीय मान्यताओं में गुफाओं को रहस्य और सम्मान के साथ देखा जाता है। इस क्षेत्र के लोग गुफाओं के संरक्षण को अपनी सामुदायिक जिम्मेदारी मानते हैं, जिससे यह स्थान आज भी अपेक्षाकृत स्वच्छ और सुरक्षित है।

क्रेम चिम्पे की यात्रा केवल रोमांच तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह आत्मचिंतन का अवसर भी प्रदान करती है। गुफा के भीतर व्याप्त अंधकार, शांति और नमी मनुष्य को अपने अस्तित्व के बारे में सोचने पर विवश करती है। यहाँ यह अनुभव होता है कि मानव प्रकृति के सामने कितना छोटा है और समय कितना विशाल। यह अनुभूति आधुनिक जीवन की तेज रफ्तार से बिल्कुल भिन्न है।

मेघालय पर्यटन के संदर्भ में क्रेम चिम्पे उन स्थलों में से एक है, जो भविष्य में विशेष पहचान बना सकता है, बशर्ते इसका विकास संतुलित और संवेदनशील तरीके से किया जाए। यह गुफा न केवल साहसिक पर्यटकों, बल्कि विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और प्रकृति–प्रेमियों के लिए भी ज्ञान और अनुभव का स्रोत बन सकती है।

क्रेम चिम्पे मेघालय की उस भूमिगत दुनिया का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ प्रकृति ने बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के अपनी रचनात्मकता को आकार दिया है। यह गुफा हमें सिखाती है कि सौंदर्य केवल खुले परिदृश्यों में ही नहीं, बल्कि धरती की गहराइयों में भी विद्यमान है। क्रेम चिम्पे की यात्रा मेरे लिए केवल एक स्थल–दर्शन नहीं, बल्कि प्रकृति के धैर्य, रहस्य और संतुलन को समझने का अनुभव रही। यह स्थान निस्संदेह मेघालय की उन अनमोल धरोहरों में से एक है, जिन्हें देखना ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखना भी हमारा दायित्व है।



श्री माँ जयन्ती मंदिर, नार्तियांग

श्रीमती स्निग्धा फुकन
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारत के उत्तर–पूर्वी राज्य मेघालय का पश्चिम जयन्तिया पहाड़ी जिला न केवल अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों का भी महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। इसी क्षेत्र के ऐतिहासिक नगर नार्तियांग में स्थित लगभग 600 वर्ष पुराना श्री माँ जयन्ती मंदिर, शक्ति उपासना का एक प्रमुख और प्राचीन हिन्दू मन्दिर है। यह माँ दुर्गा को समर्पित, 51 शक्ति पीठों में से एक है। नार्तियांग की शक्ति को जयन्ती के रूप में पूजा जाता है। माना जाता है कि यहाँ देवी सती की बायीं जांघ गिरी थी। यह मंदिर देवी शक्ति की आराधना का केंद्र होने के साथ–साथ जयन्तिया राज्य के गौरवशाली इतिहास और आध्यात्मिक परंपराओं का सजीव प्रतीक है।

जयन्तिया पहाड़ियों के हिन्दूओं, विशेषकर प्नार समुदाय के लिए, यह एक प्रमुख तीर्थस्थल है, और दुर्गा पूजा के लिए यहाँ देशभर से श्रद्धालु आते हैं।



श्री माँ जयन्ती मंदिर का संबंध प्राचीन जयन्तिया राजवंश से माना जाता है। नार्तियांग कभी जयन्तिया राजाओं की राजधानी हुआ करता था और यह मंदिर उस काल में धार्मिक, सामाजिक तथा राजकीय गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र था। ऐतिहासिक मान्यताओं के अनुसार, जयन्तिया राजा देवी माँ जयन्ती को अपनी कुलदेवी मानते थे और राज्य की समृद्धि, सुरक्षा तथा विजय के लिए यहाँ नियमित पूजा–अर्चना की जाती थी।

यद्यपि समय के साथ मंदिर की संरचना में परिवर्तन हुए हैं, फिर भी इसकी धार्मिक महत्ता आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है।

श्री माँ जयन्ती मंदिर उत्तर–पूर्व भारत के प्रमुख शक्ति उपासना स्थलों में से एक है। यहाँ देवी की पूजा शक्ति, साहस और मातृत्व के प्रतीक रूप में की जाती है।

मंदिर में विशेष रूप से नवरात्रि और अन्य धार्मिक अवसरों पर श्रद्धालुओं की बड़ी संख्या में उपस्थिति देखी जाती है। इन अवसरों पर पूजा–पाठ, हवन और पारंपरिक अनुष्ठान सम्पन्न होते हैं, जिनमें स्थानीय समुदाय सक्रिय रूप से भाग लेता है।

यह मंदिर पहाड़ी भू–भाग पर स्थित है, जिससे इसका परिवेश अत्यंत शांत और आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है। मंदिर परिसर प्राकृतिक हरियाली से घिरा हुआ है, जो यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को एक शांत एवं पवित्र वातावरण प्रदान करता है।

मंदिर की संरचना स्थानीय स्थापत्य शैली को दर्शाती है, जिसमें प्रकृति और धार्मिक आस्था का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। यह स्थल न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण है।

श्री माँ जयन्ती मंदिर न केवल श्रद्धालुओं के लिए, बल्कि धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से भी एक महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ आने वाले पर्यटक मंदिर दर्शन के साथ–साथ नार्तियांग की ऐतिहासिक धरोहरों और प्राकृतिक सौंदर्य का भी आनंद ले सकते हैं।

श्री माँ जयन्ती मंदिर, नार्तियांग, आस्था, इतिहास और संस्कृति का एक पवित्र संगम है। यह मंदिर न केवल देवी शक्ति की उपासना केंद्र है, बल्कि जयन्तिया सभ्यता की गौरवशाली विरासत का प्रतीक भी है। शांत वातावरण, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और आध्यात्मिक ऊर्जा इसे मेघालय के प्रमुख धार्मिक स्थलों में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है। यह मंदिर श्रद्धालुओं तथा इतिहास प्रेमियों दोनों के लिए प्रेरणा और श्रद्धा का स्रोत है।





मेघालय : झरनों और वादियों की धरती



श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

बादलों का घर है यह, मेघालय नाम है,
प्रकृति का खूबसूरत, जैसे कोई ख्वाब है।

शिलांग की वादियाँ हैं, 'पूर्व का स्कॉटलैंड' कहें,
हरी–भरी वाटिकाएँ, मन को यहाँ रम जाएँ।

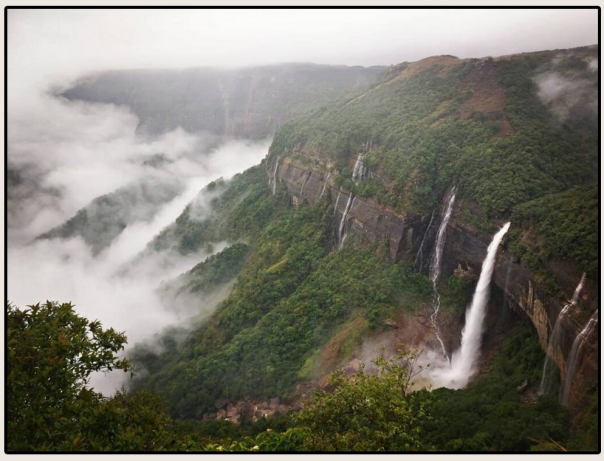
चेरापूंजी की बारिश, बौछारें लगा जाए,
गीली मिट्टी की खुशबू, जीवन में सजा जाए।

नोहकालिकाई झरना, गिरता ऊँचाई से,
देखने वालों को लगे, जैसे स्वर्ग की छाँव से।

जड़ों का पुल अजीब है, 'जीवित' कहलाता है,
यह कुदरत का कमाल है, सबको यह भाता है।

मावलिननोंग गाँव सबसे साफ, इसकी मशहूर शान है,
यहाँ का सौंदर्य अपना, एक अलग दुनिया है।

पर्यटन का स्वर्ग है, मेघालय में बसा है,
एक बार जो आएगा, फिर यहीं का हो जाएगा।



सेवन सिस्टर्स जलप्रपात, मेघालय : सात धाराओं में बहता प्रकृति का महाकाव्य



श्री दीनानाथ साह
लेखाकार

मेघालय के पूर्वी खासी पहाड़ी में स्थित सेवन सिस्टर्स जलप्रपात, जिसे स्थानीय रूप से नोहस्निथियांग फॉल्स कहा जाता है, प्रकृति के उन अद्‌भुत उपहारों में से एक है, जो देखने वाले के मन पर गहरी छाप छोड़ देता है। यह जलप्रपात चेरापूंजी (सोहरा) के निकट स्थित है, जो विश्व के सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में गिना जाता है। बादलों, पहाड़ियों और निरंतर वर्षा से घिरे इस क्षेत्र में सेवन सिस्टर्स जलप्रपात मेघालय की प्राकृतिक पहचान का प्रतीक बन चुका है।

सेवन सिस्टर्स जलप्रपात का नाम इसकी सबसे अनोखी विशेषता से जुड़ा है। यह जलप्रपात एक नहीं, बल्कि सात समानांतर जलधाराओं से मिलकर बना है, जो एक ऊँची चट्टान से एक साथ नीचे गिरती हैं। दूर से देखने पर ये सात धाराएँ सात श्वेत रेखाओं की तरह प्रतीत होती हैं, जो हरे–भरे पहाड़ों के बीच प्रकृति की भव्य चित्रकला रचती हैं। यही कारण है कि इसे "सेवन सिस्टर्स" कहा जाता है। स्थानीय लोग इसे सात बहनों की तरह मानते हैं, जो एक साथ बहते हुए सामूहिक शक्ति और सौंदर्य का प्रतीक हैं।

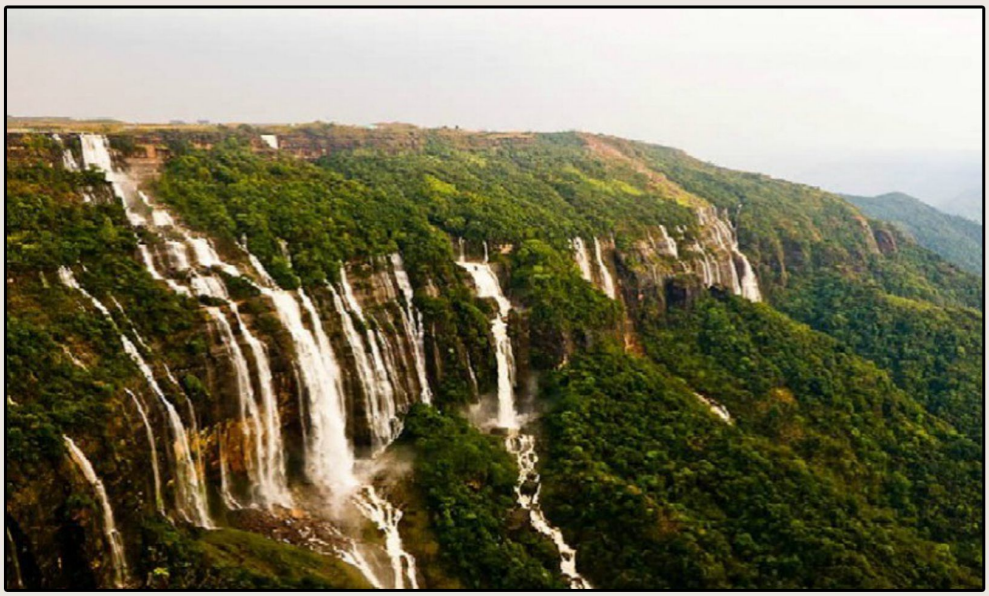
भौगोलिक दृष्टि से यह जलप्रपात लगभग 315 मीटर की ऊँचाई से गिरता है, जिससे यह भारत के सबसे ऊँचे जलप्रपातों में से एक माना जाता है। यह चट्टान सीधे बांग्लादेश के मैदानों की ओर खुलती है, इसलिए साफ मौसम में यहाँ से दूर–दूर तक फैले समतल मैदान दिखाई देते हैं। ऊँचाई से गिरता जल नीचे पहुँचने से पहले ही धुंध में बदल जाता है, जिससे दृश्य और भी रहस्यमय और प्रभावशाली हो जाता है।

सेवन सिस्टर्स जलप्रपात का सौंदर्य मौसम के साथ बदलता रहता है। मानसून के समय, जब मेघालय में मूसलाधार वर्षा होती है, तब यह जलप्रपात अपने पूर्ण वैभव में दिखाई देता है। सातों धाराएँ पूरी शक्ति से बहती हैं और पहाड़ों पर गूँजता जल का स्वर वातावरण को जीवंत बना देता है। वहीं शुष्क मौसम में इनमें से कुछ धाराएँ पतली हो जाती हैं, परंतु तब भी इसका सौंदर्य कम नहीं होता। यह परिवर्तनशीलता इस जलप्रपात को और भी विशेष बनाती है।

पर्यटन की दृष्टि से सेवन सिस्टर्स जलप्रपात मेघालय का एक प्रमुख आकर्षण है। यहाँ बने व्यू–पॉइंट से पर्यटक सुरक्षित रूप से इस जलप्रपात का आनंद ले सकते हैं। यह स्थान अत्यधिक व्यावसायिक नहीं है, जिससे इसकी प्राकृतिक शांति अब भी बनी हुई है। फोटोग्राफरों, प्रकृति–प्रेमियों और शोधकर्ताओं के लिए यह जलप्रपात विशेष आकर्षण रखता है। बदलती रोशनी, बहता जल और बादलों की आवाजाही हर पल एक नया दृश्य प्रस्तुत करती है।

पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में सेवन सिस्टर्स जलप्रपात एक संवेदनशील क्षेत्र है। बढ़ते पर्यटन के साथ यह आवश्यक हो गया है कि इस स्थान की स्वच्छता और प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखा जाए। स्थानीय प्रशासन और समुदाय मिलकर जिम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस सौंदर्य का अनुभव कर सकें।

संध्या के समय सेवन सिस्टर्स जलप्रपात का दृश्य विशेष रूप से रमणीय हो जाता है। ढलते सूर्य की किरणें जलधाराओं पर पड़कर उन्हें सुनहरी आभा प्रदान करती हैं। धीरे–धीरे बादल पहाड़ियों को ढक लेते हैं और पूरा क्षेत्र एक स्वप्निल लोक में परिवर्तित हो जाता है। उस क्षण ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति स्वयं मौन होकर अपनी महानता का अनुभव करा रही हो।



"जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

मावफ्लांग का पवित्र वन



श्रीमती मनीषा थाबाह
लेखाकार

मेघालय की धरती पर यात्रा करते हुए मुझे अनेक झरनों, नदियों और गाँवों के दर्शन का सौभाग्य मिला, परंतु जिस स्थान ने मेरे अंतर्मन को सबसे अधिक स्पंदित किया, वह था मावफ्लांग का पवित्र वन। यह केवल एक वन नहीं, बल्कि श्रद्धा, परंपरा और प्रकृति के सह–अस्तित्व का जीवंत प्रमाण है। यहाँ प्रवेश करना मानो किसी प्राचीन, अदृश्य देवालय में प्रवेश करना है, जहाँ वृक्ष स्तंभ हैं, आकाश गुंबद है और धरती स्वयं वेदी।

शिलांग से लगभग पच्चीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित मावफ्लांग की ओर बढ़ते हुए मार्ग अत्यंत मनोरम था। पहाड़ियों के वक्र पथ, हवा में घुली नमी और दूर तक फैली हरियाली सब मिलकर मन को एक अद्‌भुत शांति से भर रहे थे।

जैसे–जैसे मैं पवित्र वन के समीप पहुँची, वातावरण में एक विशिष्ट गंभीरता का अनुभव होने लगा। यह सामान्य वन–प्रदेश जैसा नहीं था। वन के प्रवेश द्वार पर एक स्थानीय मार्गदर्शक ने हमारा स्वागत किया। उन्होंने बताया कि यह वन सदियों से खासी समुदाय द्वारा संरक्षित है और यहाँ से कोई भी वस्तु—चाहे वह सूखा पत्ता ही क्यों न हो, बाहर ले जाना वर्जित है। यह नियम सुनकर मेरे मन में श्रद्धा जाग उठी।

मावफ्लांग का पवित्र वन अपने प्राचीन वृक्षों के लिए प्रसिद्ध है। विशाल ओक और रोडोडेंड्रोन के वृक्ष, जिनकी जड़ें धरती को गले लगाए हुए हैं। काई से ढकी चट्टानें, पेड़ों पर लिपटी लताएँ और धरती पर बिछी सूखी पत्तियों की परत, यह सब मिलकर एक रहस्यमयी वातावरण रचते हैं। प्रत्येक वृक्ष के भीतर जैसे कोई कथा छुपी है।

मैंने एक प्राचीन वृक्ष के समीप खड़े होकर उसकी खुरदुरी छाल को स्पर्श किया। उस स्पर्श में एक अजीब–सी गरमाहट थी। उस क्षण मुझे अनुभव हुआ कि प्रकृति केवल दृश्य नहीं, संवेदनशील सत्ता है।

यह स्थान केवल प्राकृतिक सौंदर्य का केंद्र नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रतीक है। यहाँ प्रकृति और आस्था का अद्‌भुत संगम दिखाई देता है।

वन के भीतर चलते हुए मैंने पाया कि यहाँ का मौन भी मुखर है। पत्तों की सरसराहट, पक्षियों की मधुर ध्वनि और दूर कहीं बहती जलधारा का मंद स्वर, यह सब मिलकर एक अदृश्य संगीत रचते हैं।

इस वन की एक विशेषता यह है कि यहाँ दुर्लभ औषधीय पौधे और विविध प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। मार्गदर्शक ने हमें कुछ विशेष जड़ी–बूटियों के विषय में बताया, जिन्हें स्थानीय लोग औषधि के रूप में प्रयोग करते हैं।

वन की भूमि पर चलते हुए मैंने देखा कि यहाँ की मिट्टी अत्यंत समृद्ध है। वृक्षों की जड़ें उसे सुदृढ़ बनाए हुए हैं। यह वन केवल श्रद्धा का प्रतीक नहीं, बल्कि पर्यावरण–संरक्षण का भी आदर्श उदाहरण है।

वन से बाहर निकलते समय मेरे मन में एक अलग ही शांति थी। ऐसा लगा जैसे मैं अपने भीतर के किसी खोए हुए अंश को पुनः पा गयी हूँ।

मावफ्लांग का पवित्र वन मेरे लिए केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक अनुभव रहा। वहाँ के प्राचीन वृक्षों की छाया और धुंध से ढका वातावरण, यह सब मेरे मन में हमेशा जीवित रहेगा।



मावलिननोंग: स्वच्छता, सादगी और सौंदर्य का जीवंत स्वप्न



श्रीमती विजय लक्ष्मी एस.
कनिष्ठ अनुवादक

मेघालय की धरती पर कदम रखते ही जो अनुभूति होती है, वह किसी अलौकिक संसार में प्रवेश करने जैसी होती है। बादलों से आच्छादित पहाड़ियाँ, वर्षा से धुले हुए वृक्ष, और प्रकृति की गोद में बसे छोटे–छोटे गाँव – सब कुछ मन को मोह लेने वाला। किंतु इन सबके बीच यदि किसी स्थान ने मेरे अंतर्मन को सबसे अधिक स्पर्श किया, तो वह था – मावलिननोंग गाँव।

"एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव" कहे जाने वाले इस छोटे से ग्राम ने मुझे केवल स्वच्छता का पाठ ही नहीं पढ़ाया, बल्कि जीवन की सरलता, सामुदायिक एकता और प्रकृति के प्रति आदर का अर्थ भी समझाया।

शिलांग से मावलिननोंग की ओर बढ़ते हुए मार्ग स्वयं में एक काव्य था। सड़क के दोनों ओर फैले सुपारी और केले के वृक्ष, बीच–बीच में झाँकती छोटी–छोटी झोपड़ियाँ, और पहाड़ियों पर उतरते बादल—मानो प्रकृति अपनी समस्त कोमलता के साथ यात्रियों का स्वागत कर रही हो।

जैसे–जैसे हम गाँव के समीप पहुँचे, वातावरण में एक विशेष शांति अनुभव होने लगी। यहाँ न तो शहरों का शोर था, न ही भाग–दौड़ का तनाव। केवल पक्षियों की चहचहाहट और हवा की मंद सरसराहट – मानो प्रकृति स्वयं संवाद कर रही हो।

गाँव में प्रवेश करते ही जो दृश्य सामने आया, उसने मुझे विस्मित कर दिया। संकरी पगडंडियाँ पूर्णतः स्वच्छ थीं। कहीं भी कूड़े का नामोनिशान नहीं। प्रत्येक घर के सामने सजे फूलों के गमले, बांस की बनी टोकरी–आकार की डस्टबिन, और सुव्यवस्थित आँगन, यह सब किसी आदर्श चित्र की भाँति प्रतीत हो रहा था।

मैंने देखा कि यहाँ स्वच्छता केवल नियम नहीं, बल्कि जीवन–पद्धति है। छोटे–छोटे बच्चे भी कचरा इधर–उधर फेंकने के स्थान पर डस्टबिन में डालते दिखाई दिए। गाँव के लोग स्वयं मिलकर नियमित सफाई करते हैं। यह अनुशासन किसी सरकारी आदेश से नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना से उत्पन्न हुआ है। उस क्षण मुझे लगा कि यदि इच्छाशक्ति हो, तो स्वच्छता केवल अभियान नहीं, संस्कार बन सकती है।

मावलिननोंग के घर अधिकतर लकड़ी और बांस से बने हैं। उनकी संरचना सरल है, परंतु अत्यंत सुसज्जित। खिड़कियों पर रंग–बिरंगे फूलों के गमले, आँगन में खिले ऑर्किड और गुलदाउदी, मानो प्रत्येक घर एक छोटा–सा उपवन हो।

मैं एक स्थानीय परिवार के घर के बाहर कुछ देर रुकी। उनकी मुस्कान में जो आत्मीयता थी, वह किसी भी औपचारिकता से परे थी। उन्होंने मुझे पारंपरिक खासी व्यंजनों का स्वाद चखने का निमंत्रण दिया। बांस के बर्तनों में परोसा गया भोजन सादा था, किंतु उसमें आत्मीयता का स्वाद घुला हुआ था।

मावलिननोंग के समीप स्थित जीवित जड़ पुल देखने का अनुभव अत्यंत अनूठा रहा। यह पुल रबड़ के वृक्षों की जड़ों को वर्षों तक दिशा देकर निर्मित किया गया है। जब मैं उस पुल पर चली, तो मन में अद्‌भुत भाव जागा। वर्षों की प्रतीक्षा के बाद जड़ें एक सुदृढ़ पुल का रूप लेती हैं, जो पीढ़ियों तक लोगों की सेवा करता है।

गाँव में बांस से निर्मित एक ऊँचा स्काई व्यू टॉवर भी है। उत्सुकतावश मैं उस पर चढ़ी। ऊपर पहुँचकर जो दृश्य दिखाई दिया, वह अविस्मरणीय था। दूर–दूर तक फैले हरे खेत, वृक्षों का समुद्र, और क्षितिज पर झलकती बांग्लादेश की भूमि, यह दृश्य मन को व्यापकता का बोध कराता है।

मावलिननोंग में मैंने देखा कि यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति को परिवार का सदस्य मानता है। वर्षा–जल संचयन, प्लास्टिक का न्यूनतम उपयोग, और जैविक खेती, ये सब यहाँ के जीवन का अंग हैं।

गाँव की गलियों में चलते हुए मुझे लगा जैसे धरती स्वयं मुस्कुरा रही हो। यहाँ की हवा शुद्ध थी, वातावरण में प्रदूषण का नामोनिशान नहीं था। यह अनुभव मेरे लिए किसी आध्यात्मिक साधना से कम नहीं था। मैंने सोचा, यदि संसार के प्रत्येक गाँव और नगर में ऐसी चेतना जागे, तो पृथ्वी कितनी सुंदर हो सकती है।

जब मैं मावलिननोंग से विदा ले रही थी, तो हृदय में एक हल्की–सी कसक थी। ऐसा लगा मानो मैं किसी आत्मीय स्थान को छोड़कर जा रही हूँ।

यह गाँव मेरे लिए केवल पर्यटन स्थल नहीं रहाय यह एक प्रेरणा बन गया। इसने मुझे सिखाया कि सामूहिक प्रयास से असंभव को संभव बनाया जा सकता है। स्वच्छता, अनुशासन, प्रकृति के प्रति सम्मान और सामाजिक समरसता, ये सब केवल आदर्श शब्द नहीं, बल्कि जीवन में उतारे जा सकते हैं।

आज भी जब मैं उस यात्रा को स्मरण करती हूँ, तो आँखों के सामने वही स्वच्छ गलियाँ, फूलों से सजे आँगन और मुस्कुराते चेहरे उभर आते है।



नोंगक्रेम नृत्य : आस्था, उत्सव और परंपरा का जीवंत महागान



श्री पार्थ ज्योति दे
सहायक लेखा अधिकारी

मेघालय की पहाड़ियों में शरद ऋतु के समय खासी समाज एक विशेष नृत्य उत्सव मनाता है, जिसे नोंगक्रेम उत्सव कहा जाता है। यह केवल एक नृत्य नहीं, बल्कि आस्था, कृतज्ञता और सामुदायिक एकता का अद्भुत उत्सव है।

शिलांग से लगभग पंद्रह किलोमीटर दूर स्थित स्मित गाँव वह स्थान है, जहाँ प्रतिवर्ष खासी जनजाति के लोग नोंगक्रेम उत्सव का आयोजन करते हैं। उत्सव के समय वहाँ विशेष चहल–पहल दिखाई देती है, इसलिए मैंने भी कार्यालय के कुछ दोस्तों के साथ यह उत्सव देखने की एक योजना बनाई। पारंपरिक वेशभूषा में सजे स्त्री–पुरुष समूहों में उत्सव–स्थल की ओर बढ़ रहे थे। उनके चेहरों पर उत्साह और श्रद्धा का सम्मिलित भाव स्पष्ट झलक रहा था।

स्थानीय लोगों से बातचीत के दौरान मुझे ज्ञात हुआ कि नोंगक्रेम उत्सव खासी जनजाति द्वारा फसल की समृद्धि और समाज की सुख–शांति के लिए देवी "का व्लेई सिन्सार" को समर्पित किया जाता है। यह पाँच दिवसीय धार्मिक अनुष्ठान है, जिसमें पूजा के साथ–साथ पारंपरिक नृत्य का आयोजन किया जाता है।

यह उत्सव केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि ईश्वर के प्रति कृतज्ञता और सामाजिक एकता का प्रतीक है। यहाँ प्रत्येक अनुष्ठान परंपराओं के अनुसार अत्यंत श्रद्धा से संपन्न किया जाता है। जब मैंने यह जाना, तो मेरे मन में इस नृत्य के प्रति आदर और भी गहरा हो गया। उत्सव–स्थल पर पहुँचते ही जो दृश्य मेरी आँखों के सामने था, वह अविस्मरणीय था। खुले मैदान में पारंपरिक वाद्य–यंत्रों की ध्वनि गूँज रही थीकृढोल की ताल, बांसुरी का मधुर स्वर और झंकार की लय।

कुछ ही क्षणों में नृत्य प्रारंभ हुआ। खासी युवतियाँ पारंपरिक परिधान धारा और सुनहरे आभूषणों से अलंकृत थीं। उनके सिर पर सजे मुकुट और गले में पड़ी मोतियों की मालाएँ सूर्य के प्रकाश में चमक रही थीं। युवक सफेद धोतियों और सिर पर पंखों से सजे मुकुट पहने हुए थे। उनके हाथों में तलवार और ढाल थी, जो वीरता और सुरक्षा के प्रतीक थे।

नृत्य की शुरुआत धीमी लय से हुई। युवतियाँ अत्यंत संयमित और सौम्य भाव से गोलाकार घूमती हुईं लयबद्ध कदम बढ़ा रही थीं। उनके चेहरे पर गंभीरता और श्रद्धा का भाव था। यह नृत्य चंचलता का नहीं, बल्कि गरिमा का प्रतीक था।

नोंगक्रेम नृत्य की विशेषता उसकी सरलता और सामूहिकता में निहित है। यहाँ कोई जटिल मुद्राएँ नहीं, कोई अत्यधिक प्रदर्शन नहीं। प्रत्येक कदम में संतुलन और सामंजस्य है।

मैंने अनुभव किया कि यह नृत्य केवल शरीर की गति नहीं, बल्कि आत्मा की अभिव्यक्ति है। युवतियों के कोमल कदम जैसे पृथ्वी को स्पर्श करते हुए आशीर्वाद माँग रहे हों। वहीं युवक बीच–बीच में तलवार उठाकर वीरता और संरक्षण का भाव प्रकट कर रहे थे। वाद्य–यंत्रों की लय में एक गंभीरता थी, जैसे प्रत्येक ध्वनि ईश्वर के प्रति प्रार्थना बनकर आकाश में विलीन हो रही हो। उस क्षण मुझे लगा कि मैं केवल दर्शक नहीं, बल्कि उस सामूहिक चेतना का एक अंश हूँ।

उत्सव के दौरान पारंपरिक पुजारी द्वारा विशेष अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं। इन अनुष्ठानों के समय वातावरण अत्यंत गंभीर और श्रद्धामय हो जाता है। सभी लोग मौन भाव से उपस्थित रहते हैं। मैंने देखा कि यहाँ आस्था केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि जीवन का अभिन्न अंग है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी परंपरा के प्रति गहन सम्मान रखता है।

नोंगक्रेम उत्सव केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक एकता का उत्सव भी है। दूर–दूर से लोग इस अवसर पर एकत्रित होते हैं। परिवार, मित्र और रिश्तेदार एक साथ मिलकर इस परंपरा को जीवित रखते हैं। युवाओं में भी अपनी संस्कृति के प्रति गहरा गर्व दिखाई देता है। आधुनिकता के इस युग में भी उन्होंने अपनी परंपराओं को सहेजकर रखा है।

आज जब वैश्वीकरण के प्रभाव में अनेक संस्कृतियाँ विलुप्त हो रही हैं, तब खासी समाज का यह प्रयास प्रेरणादायक है। उन्होंने अपनी जड़ों को थामे रखा है और उन्हें नई पीढ़ी तक पहुँचाया है। इस उत्सव ने मेरे भीतर अपनी संस्कृति के प्रति सम्मान और जागरूकता का भाव उत्पन्न किया।



मेघालय के आँचल में



श्री घनश्याम कुमार
भाई – श्री भगीरथ प्रसाद
सहायक लेखा अधिकारी

पहाड़ों की गोद में बैठकर,
बादलों को छू लो,
मेघालय की यादों में,
खुद को बस खो लो।

यहाँ की हवा में है,
एक अजब सी महक,
प्रकृति करती है यहाँ,
सबसे सुंदर बहक।

चारों तरफ हरियाली,
और शांति का साम्राज्य,
मन को मिलता है यहाँ,
एक नया राज्य।

नदियाँ बहती हैं नीली,
जैसे आसमान उतरा,
साफ पानी में नाव,
जैसे कोई सपना अटका।

गुफाएँ रहस्यमयी,
और झरने की गर्जन,
यहाँ का हर नजारा,
है जीवन का वर्णन।

तनाव भूलकर जरा,
इस वादी में आओ,
मेघालय के साथ में,
खुद को भी जान जाओ।



"पूर्वोत्तर का स्वर्ग : मेघालय की खूबसूरती"



श्री श्रवण कुमार
डी.ई.ओ.

मेघालय पर्यटन केवल दर्शनीय स्थलों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रकृति और मानव जीवन के बीच संतुलन की एक जीवंत मिसाल प्रस्तुत करता है। मेघालय की विशेषता यह है कि यहाँ प्रकृति को संसाधन नहीं, बल्कि सहभागी माना जाता है। जंगल, नदियाँ और पहाड़ यहाँ केवल देखने की वस्तु नहीं हैं, बल्कि स्थानीय जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। यही कारण है कि मेघालय का पर्यटन उपभोग की बजाय संरक्षण की भावना पर आधारित दिखाई देता है।

यहाँ की प्रसिद्ध जीवित जड़ पुल परंपरागत सोच से बिल्कुल अलग हैं। इन्हें बनाने में मशीनों की नहीं, समय और धैर्य की आवश्यकता होती है। कई पीढ़ियाँ मिलकर इन्हें विकसित करती हैं। यह परंपरा दर्शाती है कि मेघालय में विकास की परिभाषा तात्कालिक लाभ नहीं, बल्कि दीर्घकालिक सोच है।



मेघालय की सामाजिक संरचना भी पर्यटन को एक विशिष्ट पहचान देती है। यहाँ की मातृसत्तात्मक व्यवस्था में महिलाओं को पारिवारिक और सामाजिक निर्णयों में प्रमुख स्थान प्राप्त है। यह व्यवस्था न केवल सामाजिक समानता को दर्शाती है, बल्कि पर्यटकों के लिए एक सुरक्षित और सम्मानजनक वातावरण भी तैयार करती है।

राज्य में स्थित पवित्र वन यह प्रमाणित करते हैं कि पर्यावरण संरक्षण यहाँ कानून से नहीं, संस्कार से जुड़ा हुआ है। इन वनों को धार्मिक और सांस्कृतिक आस्था के कारण सुरक्षित रखा गया है, जो आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक उदाहरण है।

मेघालय पर्यटन को यदि एक शब्द में परिभाषित किया जाए, तो इसे "धीमा लेकिन गहरा अनुभव" कहा जा सकता है। यहाँ पर्यटक भागता नहीं, ठहरता हैय देखता नहीं, समझता है। यही कारण है कि यहाँ से लौटने वाला व्यक्ति केवल यादें नहीं, बल्कि दृष्टिकोण लेकर लौटता है।

इस प्रकार, मेघालय पर्यटन न केवल राज्य की प्राकृतिक सुंदरता को उजागर करता है, बल्कि यह भी सिखाता है कि पर्यटन का वास्तविक उद्देश्य प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना होना चाहिए। मेघालय इस विचार का सशक्त उदाहरण है कि विकास और संरक्षण साथ–साथ चल सकते हैं।



"हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।"

कमलापति त्रिपाठी

प्रकृति का अनुपम सौन्दर्य श्नोंगपदेंग

श्रीमती स्निग्धा फुकन
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भारत के उत्तर–पूर्वी राज्य मेघालय अपनी हरियाली, पहाड़ियों, नदियों एवं समृद्ध जनजातीय संस्कृति के लिए देश–विदेश में प्रसिद्ध है। मेघालय के पश्चिम जयंतिया पहाड़ी जिले में स्थित श्नोंगपदेंग एक ऐसा ही अद्‌भुत स्थल है, जो प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वातावरण और उभरते पर्यटन के कारण विशेष पहचान बना रहा है। यह गाँव डावकी के समीप, बांग्लादेश सीमा के निकट, प्रसिद्ध उम्नगोट नदी के तट पर स्थित है।

श्नोंगपदेंग अभी भी आधुनिक शहरीकरण की भीड़ से दूर एक शांत ग्राम्य क्षेत्र है, जहाँ प्रकृति तथा मानव जीवन का संतुलन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यही कारण है कि यह स्थान आधिकारिक पर्यटन मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण उभरते गंतव्य के रूप में उभरा है।

श्नोंगपदेंग पहाड़ियों और घने जंगलों से घिरा हुआ है तथा इसके बीच से बहने वाली उम्नगोट नदी इसे विशिष्ट पहचान प्रदान करती है। नदी का जल अत्यंत स्वच्छ और पारदर्शी है, जिससे नदी तल के पत्थर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यह दृश्य प्राकृतिक स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

यहाँ वर्षा अधिक होती है, जिसके कारण हरियाली वर्ष भर बनी रहती है। मानसून के दौरान नदी का बहाव तेज होता है, जबकि शीत ऋतु में जल शांत और स्थिर रहता है। शीत ऋतु में पर्यटन हेतु अनुकूल माना जाता है।

श्नोंगपदेंग गाँव मुख्य रूप से प्नार जनजाति द्वारा आबाद है। पारंपरिक रीति–रिवाज, लोकगीत, लोकनृत्य और सामुदायिक जीवन शैली आज भी यहाँ सुरक्षित रूप से जीवित हैं। स्थानीय लोग मुख्य रूप से कृषि, मत्स्य–पालन और अब पर्यटन से जुड़े कार्यों पर भी निर्भर हैं। बाहरी दुनिया से संपर्क बढ़ने के बावजूद, गाँव ने अपनी सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को संरक्षित रखा है।

उम्नगोट नदी को श्नोंगपदेंग की जीवनरेखा स्वरूप माना जाता है। उम्नगोट नदी न केवल श्नोंगपदेंग का मुख्य प्राकृतिक आकर्षण है, बल्कि यह गाँव के जीवन और अर्थव्यवस्था का आधार भी है। नदी का जल इतना स्वच्छ है कि यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी चर्चा का विषय बन चुका है। नाव की सवारी के दौरान ऐसा प्रतीत होता है मानो नाव जल की सतह पर नहीं, बल्कि हवा में तैर रही हो। नदी के किनारे फैला शांत वातावरण ध्यान, प्रकृति–अवलोकन और मानसिक शांति के लिए अत्यंत उपयुक्त है। यही कारण है कि यह स्थल पर्यावरण प्रेमियों, फोटोग्राफरों एवं यूट्यूबरों को विशेष रूप से आकर्षित करता है। श्नोंगपदेंग में उम्नगोट नदी पर कैंपिंग एवं नौकाविहार की भी सुविधा उपलब्ध है।

श्नोंगपदेंग का स्थानीय जीवन सरल, अनुशासित और प्रकृति–अनुकूल है। यहाँ के लोग अत्यंत मिलनसार तथा अतिथि–प्रिय हैं। पर्यटकों के साथ उनका व्यवहार सहयोगात्मक और सम्मानजनक होता है।

स्थानीय भोजन में चावल, मांस, मछली और पारंपरिक मसालों का प्रयोग प्रमुख है। जादोह, स्थानीय मछली व्यंजन और बाँस में पकाए गए भोजन यहाँ की विशेषता हैं। भोजन में सादगी के साथ–साथ पोषण का भी विशेष ध्यान रखा जाता है।

श्नोंगपदेंग की यात्रा के लिए अक्टूबर से अप्रैल का समय उपयुक्त माना जाता है। इस अवधि में मौसम सुहावना रहता है और नदी की पारदर्शिता अपने चरम पर होती है।

श्नोंगपदेंग केवल एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि प्रकृति, संस्कृति और सामुदायिक जीवन का जीवंत उदाहरण है। इसकी स्वच्छ नदी, शांत वातावरण, समृद्ध जनजातीय परंपराएँ इसे मेघालय के विशिष्ट एवं अत्यंत आकर्षक स्थलों में स्थान दिलाते हैं।



हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलकियाँ



















वर्ष 2025–26 के दौरान आयोजित हिन्दी कार्यशालाएँ









माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय श्री केल्विन हैरिस खारशींग का अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक पद पर पदोन्नति के उपरांत विदाई समारोह









"ऑडिट दिवस 2025" समारोह की झलकियाँ














Comptroller and Auditor General of India




Audit Week


Comptroller and Auditor General of India


Comptroller a
Audi

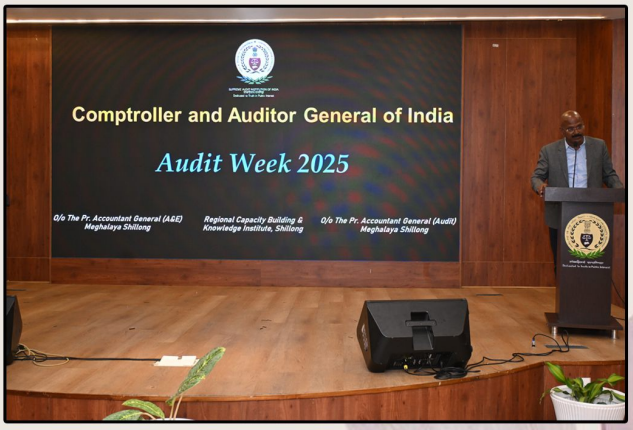



WINNER








Comptroller and Auditor General of India
Audit Week 2025
O/o The Pr. Accountant General (A&E) Meghalaya Shillong
Regional Capacity Building & Knowledge Institute, Shillong
O/o The Pr. Accountant General (Audit) Meghalaya Shillong

पेंशन एवं जी.पी.एफ. अदालत











माननीय उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
(मानव संसाधन, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, समन्वय एवं विधिक)
महोदय की अध्यक्षता में टाउन हॉल मीटिंग









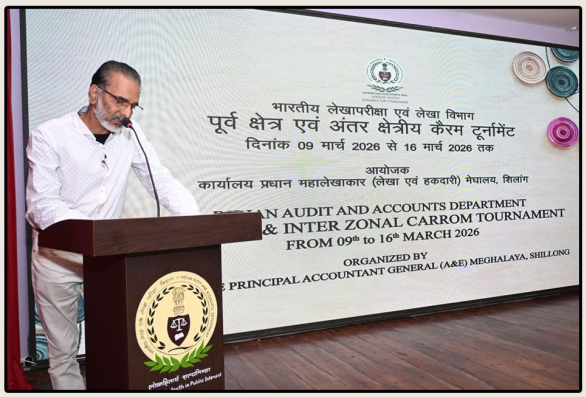
कार्यालय द्वारा आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
पूर्व क्षेत्र कैरम टूर्नामेंट 2026

































कार्यालय द्वारा आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
अंतर क्षेत्रीय कैरम टूर्नामेंट 2026







































गणतंत्र दिवस 2026 के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए माननीय प्रधान महालेखाकार महोदय



माननीय श्री रातुल चन्द्र बरा, उप महालेखाकार महोदय का स्थानांतरण उपरांत विदाई समारोह





पूर्व, पूर्वोत्तर एवं उत्तरी क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, अगरतला, त्रिपुरा









पूर्वोत्तर क्षेत्रों के लिए वर्ष 2024-25 के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार के अंतर्गत, नराकास, शिलांग – 1 (कार्यालय) को "नराकास राजभाषा सम्मान" श्रेणी में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।


“डावकी नदी – मेघालय में स्थित
एशिया की सबसे
स्वच्छ नदियों में से एक है।”